वर्ष 28, अंक 03 मार्च-2026 ₹ 3/-

हर घर में हिन्दी, हर मन में हिन्दी।

शबरी

Shabari Siksha Samachar शिक्षा समाचार

तमिलनाडु के सेलम जिले से पिछले 28 वर्षों से बिना किसी अनुदान के निरंतर प्रकाशित होनेवाली, एकमात्र हिन्दी मासिक पत्रिका है।

सदेह स्वर्ग पहुँचकर, शिव मिले चेरमान।
शिव गणों का नायक बन, करा दिए भगवान ।।

शबरी परिवार से एक और भेंट

अक्षया हिन्दी पाठ्यपुस्तक

बाल कक्षाओं से पाँचवीं कक्षा तक के छात्रों के लिए

आज ही खरीदें...
Get your copies now...

- मन भावन शैली
- सामाजिक मूल्यों पर आधारित
- सरल और ज्ञानवर्धक अभ्यास
- भाषा कौशल पर आधारित
- सृजन तथा चिंतना शक्तिवर्धक
- सरल तथा शुद्ध भाषा
- छात्रों में रुचि उत्पादक
- अभिभावक का प्रिय पुस्तक
- श्रेष्ठ अध्यापक का मन मोह पुस्तक

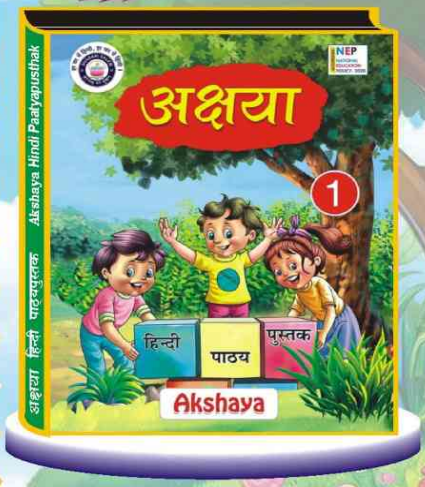

Price

LKG	₹ 90/-
UKG	₹ 100/-
Std-1	₹ 150/-
Std-2	₹ 150/-
Std-3	₹ 150/-
Std-4	₹ 150/-
Std-5	₹ 150/-

Shabari Book House proudly presents

Akshaya Hindi Paatyapusthak

a new series of Hindi third language books that inspire the learner

- Captivating storytelling
- Value-driven lessons
- Engaging book exercises
- Enhanced language proficiency
- Boosts creativity & critical thinking
- Lucid, effective language
- Sparks student curiosity
- Parent-friendly content
- The best teachers' Choice

SHABARI BOOK HOUSE

"Shabari Palace"
194, Second Agraharam,
Salem - 636 001.
Whatsapp : 94431-65414
Phone : 94433-65414,
98427-65414
Visit us at https://books.shabari.org/

SHABARI SIKSHA SANSTHAN
Shabari Palace, 193, Second Agraharam, Salem - 636 001.
& 0427-4265414 0427-4552100
Visit us @ https://shabari.in

छठा शबरी परिवार मिलन

अत्यंत हर्ष, गर्व और बड़े प्यार के साथ हम घोषित करते हैं कि आगामी छठा शबरी परिवार मिलन 29-03-2026 रविवार के दिन श्री सरस्वती त्यागराजा कॉलेज (STC), पोल्लाच्ची में संपन्न होनेवाला है। हिन्दी प्रचारक तथा हिन्दी प्रेमियों से अनुरोध है कि इस मिलन में भाग लेनेवाले तुरंत अपना नाम निःशुल्क दर्ज करें। परिवार मिलन में भाग लेने के लिए अपना नाम रजिस्टर करना अनिवार्य है।

6வது சபரி பரிவார் மிலன்

இதயங்களை இணைத்திடும் '6-வது சபரி பரிவார் மிலன்' விழா, வரும் 29-03-2026 (ஞாயிற்றுக் கிழமை) பொள்ளாச்சி, ஸ்ரீ சரஸ்வதி தியாகராஜா கல்லூரி (STC)-யில் நடைபெறவுள்ளது என்பதை பெருமகிழ்ச்சியுடன் தெரிவித்துக் கொள்கிறோம். இவ்விழாவில் பங்கேற்க விரும்பும் அனைத்து ஹிந்தி பிரச்சாரகர்கள் மற்றும் ஹிந்தி ஆர்வலர்கள், தங்கள் பெயரை உடனே இலவசமாக முன்பதிவு செய்து கொள்ளுமாறு அன்புடன் கேட்டுக்கொள்கிறோம். பதிவு செய்தவர்கள் மட்டுமே அனுமதிக்கப்படுவார்கள் என்பதையும் தெரிவித்துக் கொள்கிறோம்.

इस अंक में

अनमोल वचन 6
संपादक की कलम से 7
मुरब्बा मुस्तफा 8
महाकवि सूरदास और कृष्ण भक्ति 10
विद्या 13
इच्छाओं का संतोष 14
कविता का कैसे जन्म होता है ... 15
वह लड़की 16
दूर से कोई 17
अधूरा सपना 18
जय जय भारत देश 19
नन्द को लाला । 20
सखी री फागुन आयो 21
कल 21
ग़ज़ल 22
हिन्दी दिवस मनाओ 22
भगवान शिव 23
जीवन है अनमोल 23
अफसरों की शहादत का शोर ? . 24
ग़ज़ल 24
मैं कांटा नहीं फूल बनना चाहता हूँ 25
महान संत शिव भक्त–तमिल नायनमार 28
वीर सावरकर जी 30
मनका–मनका बोलेगा 31
श्रृंगार भोले का 31
फागुन की मस्ती 32
खतरे में है आत्मसम्मान 32
होली 33
फिर वसंत ऋतु आई 33
होली आयो रे मोहन 34
नवसंवत्सर में 34
बहका बसंत है 35
लकड़ी 35
अक्सर एक व्यथा ही यात्रा है मेरी 36
प्रकृति की गोद में ले सुकून 36
गीत बहारों के गाते हुए मुस्कुराया वसन्त 37
मुझे पसंद है... 37
बासंती दोहा छंद 38
गीतिका 38
रंग भर दो आज फिर तुम 39
माँ का आशीर्वाद 39
जय माँ शारदे 40
अभिमान शोभा नहीं देता है 40
रंगो की बहार में 41
माँ कहती है 41
कल आज का प्यार 42
नारायण वंदन 42
पाठकों के पत्र 42
नवांकुर 43
पठितम्, अभिरुचितम्, अनूदितम् . 44
தமிழமுது 46
அருள் உலா 47

வாணிவிகாஸ் வாய்மொழித் தேர்வு விவரம்

தேர்வு நடைபெறும் மாதம்	தேர்வு நடைபெறும் தேதி	தேர்வு விண்ணப்பங்கள் வழங்கும் நாள் கடைசி தேதி	₹10/- தாமதக் கட்டணத்துடன் செலுத்த
ஏப்ரல்-2026	19-04-2026	01-01-2026 to 28-02-2026	05-03-2026
ஜூலை-2026	19-07-2026	01-04-2026 to 31-05-2026	05-06-2026
அக்டோபர்-2026	18-10-2026	01-07-2026 to 31-08-2026	05-09-2026
ஜனவரி-2027	24-01-2027	01-10-2026 to 30-11-2026	05-12-2026

வாணி விகாஸ் தேர்வுகளுக்குரிய விண்ணப்பங்கள் ஆன்லைன் (ONLINE) வாயிலாக மட்டுமே (https://shabari.in) ஏற்றுக் கொள்ளப்படும்.

★ **D.D.** *மற்றும் மணியார்டர் ஏற்றுக் கொள்ளப்படமாட்டாது.*

our web portal @ **https://shabari.in**

पढ़ो मन भरके

शबरी शिक्षा समाचार

वर्ष 28, अंक 03 | मूल्य ₹ 3/- | मार्च - 2026

प्रधान संपादक

एम. वेंकटेश्वरन

संयुक्त संपादक

आर. जयकरन

सहायक संपादक

आर.जे. संतोष कुमार

कार्यालय

Shabari Siksha Samachar

R.O.: 37, First Agraharam, Salem - 636 001.
A.O.: Shabari Palace,
193 & 194, Second Agraharam,
Salem - 636 001. Tamil Nadu. India.
Phone : 94431-65414, 94433-65414
e-mail : shabarisamachar@gmail.com

संस्थापक व प्रकाशक

Published & Owned by M. Sridhar, on behalf of SHABARI SIKSHA SAMACHAR, 37, First Agraharam, Salem - 636 001 & Printed by D. SivaKumar at Sivamurthy Press, 35, A.P. Koil Street, Salem - 636001.

समस्त न्यायिक विवादों के लिए क्षेत्राधिकार सेलम होगा । शबरी शिक्षा समाचार में छपी किसी भी सामग्री से संबंधित पूछताछ व किसी भी प्रकार की कार्यवाही प्रकाशन तिथि से एक माह के अंदर की जा सकती है, बाद में किसी भी पूछताछ पर जवाब हेतु बाध्य नहीं । सभी सामग्री से संपादक सम्मत या सहमत हो यह ज़रूरी नहीं ।

SHABARI BOOK SALES

Whatsapp : 9443165414

Office Phone : 9842765414

Office Phone : 9443365414

VANI VIKAS NUMBER

0427-4265414

0427-4552100

Office Hrs : 10.00 AM to 5.00 PM

अनमोल वचन

दूरी न सहना

तमिल संत महान तिरुवल्लुवर के अनुसार प्रेम में दूरी असहनीय है । प्रेमी से प्रेमिका कहती है । अगर तुम कभी मुझसे दूर नहीं जाओगे तो उसे मुझसे कहना । अगर तुझे दूर जाकर वापस आना है तो आते वक्त जो जीवित रहेंगे उनसे कहना । दूरी जान ले लेती है ।

उनकी नज़र, पहले मुझे बहुत ही अच्छा लगती थी । अब उनकी दूरी के बारे में सोचते हुए मुझे बहुत दुख हो रहा है ।

दूरी से उत्पन्न दुख को जानते हुए भी हमसे प्रेमी का दूर जाना, प्रेमी के दूर न जाने का कसम पर भी भरोसा नहीं देता है ।

वादा किया था कभी दूर नहीं जाऊँगा । डरना नहीं । कहकर भी दूर गये तो उनपर भरोसा करने पर क्या दोष है ?

प्रेमी के दूर चले जाने पर दोनों का पुनर्मिलन आसान नहीं है । इसलिए दोनों के बीच में कभी दूरी नहीं होनी चाहिए ।

काम के वास्ते या किसी कारण मुझसे दूर जाने की बात मुझसे कहनेवाले कठोर दिलवाले प्रेमी से उसके वापस आकर प्यार करने पर भरोसा करना बेकार है ।

मेरे हाथ के कंगन आगे से गिरकर सबको मेरे प्रिय के दूर चले जाने की खबर सबको सुना देगा ।

उस गाँव में या उस नगर में जहाँ कोई संबंधी नहीं है वहाँ जीना मुश्किल है । मेरे प्रिय की दूरी उससे भी दुखदायक है ।

आग को छूने से जलता है । लेकिन अपने प्रिय की दूरी बिना छुए ही जला डालती है ।

अगर प्रेमी धन कमाने के लिए कहीं दूर चला गया तो उसकी प्रतीक्षा में रहनेवाली कुछ नारी यहाँ है । लेकिन मैं कभी इस दूरी को अपना नहीं सकती । सह नहीं सकती ।

✍ संपादक की कलम से ...

प्रिय पाठक बन्धुवर, सस्नेह वन्दे ।

'जीवन साथी' इस शब्द का प्रयोग जीवन में हर कोई किया करते हैं । जीवन साथी से हमारा मतलब पति या पत्नी से है । पति अपनी पत्नी को जीवन साथी मानता है तो पत्नी अपने पति को जीवन साथी मानती है । अर्धनारीश्वर का यह तत्व सब के मन में पाया जाता है । लेकिन असल में जीवन साथी किसको हम कह सकते हैं ? जीवन साथी कौन बन सकता है ? इस पर खूब विचार करने से हमें पता चलता है कि अपना जीवन साथी कोई और नहीं हमारा तन है । तन स्वस्थ हो तो ही हम कुछ कार्य कर पायेंगे । तन और मन की स्वस्थता जीवन को मनोहर बना देता है ।

तन को बलवान बनाने के लिए हमें नियमित रूप से कसरत करना चाहिए । कसरत तन के साथ मन को भी स्वस्थ रखने में हमारी मदद करता है । हर रोज हर्मे कसरत करना चाहिए । अपने तन और मन को बलवान बनाने में कसरत हमारा सहायक सिद्ध होगा । नियमित रूप से कसरत करने से हमारा तन बलवान तथा रोगहीन बना रहेगा । जिन्दगी सुखमय ठहरेगी ।

तन को स्वस्थ रखने के लिए हमें तरकारियों के साथ फलों का भी सेवन करना चाहिए । उनमें उपलब्ध ऊर्जा से हमारा तन मजबूत बनेगा । हमें हानिकारक पदार्थ तथा भोजन का उपयोग नहीं करना चाहिए । हमें स्वादिष्ट नहीं, तंदुरूस्ती बढा देनेवाले खाद्य पदार्थों का सेवन नियमित रूप से करना चाहिए । फलदायक फलों का सेवन बार-बार करना चाहिए । फलों का नियमित सेवन तन को बलवान बना देता है ।

अब अपने असली जीवन साथी का पहचान कर उसे ताकतवान बनाने का प्रयास आरंभ कर दीजिए । पति हो तो पत्नी, पत्नी हो तो पति को भी अपने साथ हर रोज सुबह कसरत करने का उत्साह प्रदान कीजिए । तन है तो स्वस्थ मन के साथ आनंदमय जीवन भी संभव होगा । अन्यथा नहीं ।

जय हिन्द ! जय हिन्दी !!

मुरब्बा मुस्तफा

– विद्या सागर आर.जे. संतोष कुमार,
कोवै, तमिलनाडु

शहर का वह बहुत ही मशहूर बस अड्डा था । दूर दूर तक जानेवाली गाड़ियाँ वहीं से निकलती थी । इसलिए देर रात तक वहाँ लोगों की भीड़ बनी रहती थी । बस अड्डे के अंदर घुसते ही लोगों की नज़रें अपने मार्ग तक जानेवाली बसों को ढूँढती फिरती थीं । भले ही बस 5 मिनट का ही हो, लोगों की नज़रें सबसे पहले निकलनेवाली बसों तक जाती थी ।

मैं भी मंदिर जाकर अपना घर वापस लौट रहा था । बस में बैठ गया था । बस में काफी लोग बैठे हुए थे । तभी वह आदमी बस के अंदर आया । काले रंग का होने पर भी कद से वह बहुत ही ऊँचा दिख रहा था । अपने हाथ में अदरक के मुरब्बे का डिब्बा पकड़ा हुआ था । जब उसे पता चला कि कोई उसे भाव तक नहीं दे रहे हैं तब वह जोर से कहने लगा – भाइयो–बहनो मेरे हाथ में आप जो देख रहे हैं वह साधारण मुरब्बा नहीं है । यह अदरक का मुरब्बा है ।

आवाज़ सुनकर कुछ लोग उसकी तरफ देखने लगे तो उसका हौसला बढ़ गया । आगे कहने लगा – यह अदरक का वह चाय जैसा नहीं है जिसमें बहुत कम मात्रा में अदरक मिलाया जाता है । यह अदरक का असली मुरब्बा है जिसमें 12 जड़ी बूटियाँ का मिश्रण है । शक्कर से नहीं शहद से बनाया गया मुरब्बा शरीर के लिए बहुत ही लाभदायक है । जिंदगी में कम से कम एक बार भी इसे नहीं खाया तो वह जिंदगी क्या जिंदगी है ? एक बार खाएँगे तो जिंदगी भर आप इसे कभी नहीं भूलेंगे । उसके इतना कहने पर मैं अपने आप को रोक नहीं पाया जेब से ₹20 का एक नोट निकाल कर उसे दिया । सलाम करते हुए उसने नोट ले लिया और मेरे हाथ में मुरब्बा का एक पैकेट थमा दिया ।

मेरी ओर इशारा करते हुए वह लोगों से कहने लगा – ये साहब तो बड़े समझदार हैं । उनकी जिंदगी तो अब उदाहरण स्वरूप है । मुझे देखकर वह एक बार फिर से सलाम करने लगा । इसे देखकर लोग एक–एक करके उससे मुरब्बा खरीदने लगे । उसका मुह बंद ही नहीं हो रहा था, वह तो अपने मुरब्बा की खूबी का वर्णन करते रहने लगा ।

तब तक ड्राइवर और कंडक्टर बस में चढ़ने लगे । कंडक्टर ने कहा – बस

मुरब्बा मुस्तफा अब तो खूब बिक्री हो चुकी है । अब हमें भी काम करने दो । हँसते-हँसते वह उस गाड़ी से उतर गया । पता नहीं उसका असली नाम क्या है ?

मैं मुरब्बा का एक छोटा-सा टुकड़ा लेकर अपने मुँह में डाला । मुरब्बा सच में बहुत ही अच्छा था । सारे लोग उसके व्यवहार से बहुत ही खुश थे । मेरे पास जो लड़का बैठा था वह अब तक अपना मुँह नीचे करके बैठा था । मुरब्बा मुस्तफा के नीचे उतर जाने के बाद वह अपना सिर ऊपर उठाया ।

मुरब्बा का एक छोटा-सा टुकड़ा उसके सामने बढ़ाते हुए मैंने पूछा - इतनी देर मुँह छुपाकर क्यों बैठा था ? यह आदमी जो मुरब्बा बेच रहा था वह कोई और नहीं है वे मेरे पिता हैं । लोगों के सामने इतना अच्छा व्यक्ति बननेवाला यह चतुर व्यक्ति परिवार का ख्याल बिलकुल नहीं करता है । शाम तक जितना भी पैसा मिलता है उससे खूब शराब पीता है । मैं और मेरे भाई पढ़ते-पढ़ते शाम को जो काम कर रहे हैं उसी से हमारा घर चल रहा है । इस आदमी से मैं घृणा करता हूँ । सिर्फ अपना ख्याल करनेवाला अपना सुख चाहनेवाला, पिता कैसे हो सकता है ? लोगों को आयुर्वेदिक जड़ी बूटियाँ का ज्ञान प्रदान करनेवाला यह व्यक्ति अपने चरित्र पर कभी नहीं सोचता । मुझे मुरब्बा से और इस व्यक्ति से भी दूर रहना ही पसंद है । उस लड़के का शब्द सुनकर मेरे मुँह में जो मुरब्बा था वह फीका पचने लगा ।

नशा सिर्फ उसे अपनानेवाले के जीवन मात्र को नहीं उसके परिवारवालों का भी सुख और चैन को छीन लेता है । जब कोई नशाखोर हो जाता है वह सिर्फ अपने बारे में सोचता है । उसकी जिंदगी सिर्फ अपने आप को नशे में बने रखने के लिए बन जाती है । अपनी पत्नी या पुत्रों के बारे में उसे कभी कोई चिंता तक नहीं होती । अपने सुख के लिए किसी भी हद तक दूसरों को दुख पहुँचाने के लिए तैयार हो जाता है । मुरब्बा मुस्तफा को देखने से लोगों को यह पता भी नहीं चलता कि वह नशा का गुलाम है । अपने उस मुरब्बा से बाकी के स्वास्थ्य पर ध्यान देनेवाला मुस्तफा मुरब्बा अपने परिवार को दुख से सताने का प्रमुख कारण बन जाता है । वह लड़का जो मेरे पास बैठा था उसके चेहरे में दिखनेवाली वह उदासी, उसकी क्रूरता की साक्षी बनी रही । बस चलती रही मैं भावनाओं में डूब गया था ।

महाकवि सूरदास और कृष्ण भक्ति

– डॉ. राजलक्ष्मी कृष्णन,
चेन्नै, तमिलनाडु

हिन्दी में कृष्ण भक्ति शाखा का उत्कर्ष प्रमुख रूप से वल्लभाचार्य के समय से होता है । वल्लभाचार्य ने अद्वैत दर्शन के प्रवर्तक शंकराचार्य के मायावाद का खंडन किया । वल्लभाचार्य ने ब्रह्म के तीन रूप माने हैं; क्षर ब्रह्म, अक्षर ब्रह्म और पुरुषोत्तम ब्रह्म । क्षर ब्रह्म तो जगत है, अक्षर ब्रह्म निर्गुण है और पुरुषोत्तम ब्रह्म भगवान श्रीकृष्ण हैं ।

वल्लभाचार्य ने ब्रह्मसूत्र, उपनिषद और गीता पर भी भाष्य लिखे । इनके चार शिष्य सूरदास, कुंभनदास, परमानंददास और कृणदास को और अपने चार शिष्यों नंददास, गोविंदस्वामी, छीत स्वामी तथा चतुर्भुज दास को श्रीकृष्ण लीला का गान करने के लिए निर्वाचित कर इन्हें अष्टछाप का नाम दिया । ये भगवान के अष्टसखाओं के अवतार माने जाते हैं । हिन्दी भक्ति काल को ''स्वर्ण युग'' के नाम से भी जाना जाता है ।

हिन्दी भक्ति काव्य में सूरदास का स्थान अत्यन महत्वपूर्ण और विशिष्ट है । वे सगुण भक्ति धारा के, श्रेष्ठतम कवियों में माने जाते हैं । विशेष रूप से कृष्ण भक्ति के अमर गायक के रूप में प्रतिष्ठित हैं ।

सूरदास के काव्य में भक्ति केवल आध्यात्मिक साधना नहीं रह जाती, बल्कि वह मानवीय संवेदनाएँ भावनात्मक गहराई और लोकजीवन से जुड़ी अनुभूतियों का सजीव रूप धारण कर लेती है । उनके पदों में वात्सल्य, प्रेम, करुणा, दास और माधुर्य रस का ऐसा अद्भुत समन्वय दिखाई देता है, जो हिन्दी साहित्य में बहुत ही दुर्लभ है ।

ब्रजभाषा में रचित सूरदास का काव्य :

संगीतात्मकता और चित्रात्मकता से परिपूर्ण है । बालकृष्ण की लीलाओं का जैसे सजीव और हृदयस्पर्शी चित्रण सूरदास ने किया है, वैसा अत्यन्त दुर्लभ है । इस लेख का उद्देश्य उनकी काव्य रचनाओं का और उसमें निहित भावव्याख्या का समेकित और विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना है, जिससे उनके काव्य की

भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक और दार्शनिक विशेषताओं को स्पष्ट रूप से समझा जा सके ।

महाप्रभु वल्लभाचार्य ने जिस कृष्णभक्ति का प्रचार किया, उससे विशाल जन समुदास तो प्रभावित हुआ ही, अनेक कवि भी प्रभावित होकर उनके शिष्य बन गए । उन्ही की प्रेरणा से सूरदास जी ने भगवान के सगुण रूप का गान किया । उन्होंने गोवर्धन पर्वत पर श्रीनाथ जी के मंदिर की स्थापना की । इस मंदिर में विधिवत पूजन, भजन, भोग, कीर्तन आदि की व्यवस्था के लिए उनके कुछ शिष्य रहा करते थे । श्री वल्लभाचार्य के पश्चात उनके पुत्र गोसाईं विट्ठलनाथ जी ने भी उक्त परंपरा को आगे बढ़ाया । सूरदास, कुम्भनादास, परमानंददास और कृष्णदास ये चारों कवि वल्लभाचार्य के शिष्य थे और गोविंदस्वामी, नंददास, क्षीतस्वामी तथा चतुर्भुजदास, गोसाईं विट्ठलनाथ जी के शिष्य थे । इन अष्टछाप के कवियों में सूरदास का स्थान सर्वोपरि माना जाता है ।

सूरदास का निवास स्थान रुनकता बताया जाता है । कुछ लोग उनकी जन्मभूमि आगरा के पास साही नामक गाँव में बताते हैं । ''चौरासी वैष्णव की वार्ता'' के आधार पर इन्हें सारस्वत ब्राह्मण कहा जाता है । इनके पिता का नाम रामदास बताया जाता है । कुछ विद्वान उनका स्थान गऊघाट भी बताते हैं ।

कहा जाता है कि वे जन्म से ही अँधे थे । नेत्रहीन होने पर भी उन्होंने, कृष्ण की बात लीलाओं का इतना सुन्दर और सजीव वर्णन किया है कि, हमें पढ़कर आश्चर्य होता है । कोई भी अन्धा व्यक्ति इतना सजीव और सुन्दर वर्णन नहीं कर सकता । उन्होंने सोते हुए कृष्ण का अधरपुट हिलाने का और गोप–गोपियों की क्रीडादि का जो वर्णन किया है, वह ऐसा नहीं है, जो किसी से सुनकर लिखा गया हो । गोवर्धन पर्वत पर स्थित श्रीनाथ जी के मन्दिर में कीर्तन का कार्य करने में उन्हें असीम आनंद मिलता था ।

सूरदास की प्रमुख कृतियाँ :

सूर सागर, सूरसारावली और साहित्य लहरी मानी जाती है । इन तीनों ग्रन्थों के माध्यम से सूरदास की भाव–जगत, काव्य दृष्टि और दार्शनिक चिन्तन स्पष्ट रूप से उभरकर हमारे सामने आता है । इसमें श्री कृष्ण की बाललीलाओं का, किशोरावस्था और रासलीला का भावपूर्ण चित्रण मिलता है । इस ग्रन्थ के पदों में वात्सल्य रस विशेष रूप से दृष्टिगोचर होता है ।

जैसे :-

''मैया मोरी, मैं नहीं माखन खायो ।''

बच्चों के स्वाभाविक चतुराई, भोलेपन, स्वयं को निर्दोष साबित करने का चित्रण बहुत ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत हुआ है । माता यशोदा की ममता इन सबके माध्यम से सूरदास ने बात मनोवैज्ञानिक की गहरी समझ प्रस्तुत की है । यहाँ श्रीकृष्ण ईश्वर न होकर एक सामान्य बालक के रूप में लोगों के सामने प्रस्तुत होते हैं, जो बहुत ही प्रशंसनीय है ।

सूरसारावली :

इसमें सूरदास का दार्शनिक पक्ष उभरकर हमारे सामने आता है । इसमें कर्मसिद्धांत, जीव और ईश्वर के बीच का संबध तथा नैनिक कर्तव्यों के संबध पर विचार किया गया है ।

''जोजस करै, सो तस फल पावै ।''

इसमें कर्म के सिद्धांत को स्पष्ट किया गया है । सूरदास का कहना है कि मनुष्य को अपने कर्मों के अनुसार, फल प्राप्त होता है ।

साहित्य लहरी :

इसमें सूरदास की काव्य दृष्टि भाषा चेतना और सौन्दर्य बोध स्पष्ट होता है ।

''भक्ति बिना निहिं होई हरि प्रीत ।''

ईश्वर प्राप्ति का एकमात्र साधन ईश्वर की सच्ची भक्ति ही है । जो भी कृष्ण भक्ति में लीन हो जाता है, उसे कृष्ण भगवान अवश्य ही दर्शन देते हैं । ईश्वर के अनुग्रह से ही मनुष्य को सद्गति मिलती है । अटल भक्ति - कर्मभेद, जातिभेद सब के ऊपर है । सूरदास ने वात्सल्य, शृंगार और शान्त रस को अपनाया । वात्सल्य रस में वे सबसे आगे थे । उनकी भाषा शुद्ध ब्रजभाषा है । बहुत ललित और श्रुति मधुर है । सत्संग और प्रीति विषयों को वर्णन बहुत अच्छा है । सूरदास ने कृष्ण की बाल-लीलाओं का सुन्दर सरस और सरल वर्णन किया है ।

निष्कर्ष :

सूरदास हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल के सगुण धारा के सबसे प्रभावशाली कवि माने जाते हैं । उनका नाम सुनते ही भगवान श्रीकृष्ण की बाल-लीलाओं और निस्वार्थ प्रेम का चित्र आँखों के सामने प्रकट हो जाता है । उनके गुरु श्री वल्लभाचार्य थे, जिन्होंने सूरदास को श्रीनाथ के मंदिर में कीर्तन करने का दायित्व

सौंपा था । हमें भी श्रीनाथ, मंदिर का दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ । अष्टछाप के कवियों में सबसे प्रमुख और ''जहाज'' कहे जानेवाले कवि सूरदास ही हैं । वैसे उन्होंने सवा लाख पदों की रचना की थी, परन्तु वर्तमान में कुछ पद ही उपलब्ध हैं । उन्हें ''वात्सल्य रस का सम्राट'' भी कहा जाता है । कृष्ण के बचपन का ऐसा सजीव वर्णन इन्होंने किया है कि, विश्वास ही नहीं होता कि व नेत्रहीन थे । उनकी काव्य-व्याख्या की यही विशेषता उन्हें हिन्दी साहित्य में अमर कवि के रूप में प्रतिष्ठित करती है ।

धन्यवाद ।

संदर्भ ग्रन्थ :

1. हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास-बाबू गुलाब राय ।
2. सूरसागर
3. सूरसारावली
4. साहित्य लहरी
5. साहित्य भारती - उत्ता प्रदेश, हिन्दी संस्थान लखनऊ ।

धन्यवाद ।

जय भारत ! जय हिन्दी !!

विद्या

- श्री. अनंग पाल सिंह भदौरिया 'अनंग',
ग्वालियर, म.प्र.

विद्या बिन उन्नति, प्रगति, सम्भव नहिं संसार ।
यह वह पूंजी देय जो, गौरव का अधिकार ।।
गौरव का अधिकार, और उत्थान कराती ।
देती बना महान, मान, सम्मान दिलाती ।।
कह 'अनंग' कर जोरि, अगर मन बसी अविद्या ।
सम्भव नहिं उत्कर्ष, प्रगति की वाहक विद्या ।।

इच्छाओं का संतोष

– श्री. वीरेंद्र बहादुर सिंह,
नोएडा, उ.प्र.

इच्छाप्रसाद बहुत आलसी था, इसलिए गरीब भी था । एक दिन उसने सोचा कि क्यों न किसी सिद्ध योगी से मिलन हो जाए और उनसे ऐसा वरदान माँगूँ कि मेरा पूरा जीवन आनंद और आराम में बीते । यही सोच कर वह सिद्ध योगी की खोज में निकल पड़ा । जंगलों में भटका, पहाड़ चढ़े, गुफाओं में गया, बहुत भटकने के बाद अंततः उसे एक सिद्ध योगी मिल गए ।

इच्छाप्रसाद की कठिन यात्रा देख कर योगी को उस पर दया आ गई । उन्होंने पूछा, वत्स, इतना कष्ट क्यों उठाया ? तुम्हें क्या चाहिए ? इच्छाप्रसाद ने तुरंत कहा, महाराज, मुझे ऐसा वरदान दीजिए कि मेरी पूरी जिंदगी सुख-चैन से बीते ।

सिद्ध योगी जानते थे कि जब तक मन में असंख्य अच्छी-बुरी इच्छाएँ हैं, तब तक सच्चा सुख संभव नहीं है । फिर भी उसे यह सत्य समझाने के लिए उन्होंने इच्छाप्रसाद को एक आसन दिया और कहा, इस आसन पर बैठ कर तुम जो भी इच्छा या विचार करोगे, वह पूरा हो जाएगा ।

इच्छाप्रसाद बहुत प्रसन्न हुआ । वह आसन पर बैठा और घर पहुँचने की इच्छा की, क्षण भर में वह घर पहुँच गया । उसे जोरों की भूख लगी । उसने स्वादिष्ट भोजन की इच्छा की और तुरंत मिठाइयाँ, नमकीन, तरह-तरह की सब्जियों से भरा थाल सामने आ गया । फिर उसे नींद आई, तो नरम गद्दे और तकियोंवाला आरामदेह पलंग प्रकट हो गया । वह गहरी नींद सो गया ।

जागने पर उसने सोचा कि उसका घर बहुत जर्जर है । आसन पर बैठ कर उसने एक भव्य महल की इच्छा की, बाग-बगीचे, पानी का कुंड और बड़े-बड़े कक्षोंवाला महल तुरंत बन गया । फिर उसने सुंदर साज-सज्जा की इच्छा की, तो महल सुंदर फर्नीचर से भर गया । सफाई के लिए नौकर चाहिए, यह सोचते ही नौकर भी उपस्थित हो गए । इच्छाप्रसाद आदेश देने लगा ।

अब वह हर तरह से सुखी था और खुद पर प्रसन्न था कि उसने सिद्ध योगी से मिलने की युक्ति अपनाई । तभी उसके मन में एक विचार आया कि यह सब सुख है, लेकिन अगर भूकंप जैसी कोई आपदा आ जाए तो क्या होगा ? यह विचार आते ही भूकंप आ गया । महल ढह गया, नौकर मलबे में दबकर मर गए । महल और साजसज्जा सब खंडहर बन गए । इच्छाप्रसाद किसी तरह मलबे से बाहर तो निकल आया, लेकिन उसका आसन कहीं दब गया था । उसका घर भी नहीं बचा ।

जहाँ इच्छाएँ, असंतोष और मन में अनिष्ट विचार हैं, वहाँ स्थाई सुख कभी नहीं मिल सकता ।

कविता का कैसे जन्म होता है

– श्री. राम कृष्ण रस्तोगी,
गुरुग्राम, हरियाणा

कवि की कविता आसानी से नहीं बन पाती है ।
ये कवि महोदय से काफी परिश्रम करवाती है ।।
पहले वह मस्तिष्क में आकर खूब शोर मचाती है ।
फिर कलम स्याही से कागज पर लिखवाती है ।।
लिखने के बाद भी अनेक कागज़ों को फटवाती है ।
अगर शब्द सही नहीं है शब्दों को भी बदलवाती है ।।
कभी कभी तो ये पत्नी की डांट भी खिलवाती है ।
अगर जरूत पड़ जाये तो खाना भी बन्द कराती है ।।
फिर ये मोबाइल या लेपटॉप पर टाइप करवाती है ।
फिर ये पत्र पत्रिकाओं को भी प्रेषित की जाती है ।।
प्रेषण के बाद पत्र–पत्रिका मे प्रकाशित हो पाती है ।
तब ये कविता पाठकों को पढ़ने को मिल पाती है ।।
कभी कभी तो ये कविता कवि मंचों पर इठलाती है ।
प्यारे श्रोताओं का मनोरंजन कर ताली पिटवाती है ।।

वह लड़की

– डॉ. अलका अग्रवाल,
जयपुर, राजस्थान

उस दिन जयपुर बस स्टैंड पर पहुँचते-पहुँचते देर हो गई । जैसे-तैसे चलती बस में चढ़ पाया । सीट मिलने की तो आशा भी नहीं थी, लेकिन खड़े रहना भी मुश्किल हो रहा था । होली का अवसर, त्योहार पर बसों में भीड़ ज्यादा ही हो जाती है । गर्मी का मौसम और खचाखच भरी बस, पसीने की बदबू से जी घबराने लगा था । धीरे-धीरे थोड़ी देर बाद, कुछ सवारी उतरने एवं कुछ के सीटों पर एडजस्ट हो जाने के कारण जान में जान आई । जब मेरे पासवाली सीट से एक सवारी उतरी तो मैं तुरंत उस सीट पर बैठ गया ।

तीन सवारी की सीट थी । मेरे पास एक बुजुर्ग व्यक्ति बैठे थे और खिड़की की तरफ एक युवती । जैसे ही युवती ने खिड़की से ध्यान हटाकर मेरी ओर देखा, मैं देखता ही रह गया । साक्षात रमा मेरे सामने थी । वही रंग-रूप, वही नाक-नक्श, वैसे ही शालीनता से पहने गए सलवार-कुर्ते और दुपट्टा, कानों में छोटी-छोटी बालियाँ, गले में पतली सी चेन और चेहरे पर हमेशा रहनेवाली मुस्कान । मैं उसे अपलक देखता ही रहा । वह लड़की अजीब सी बेचैनी महसूस करने लगी थी । मुझ से बचने के लिए, उसने फिर खिड़की की ओर देखना शुरू किया ।

मेरा गंतव्य भी आनेवाला था । तभी मेरे कस्बे के बस स्टैंड पर बस रुक गई । मैं अनिर्णय की स्थिति में ही बस से उतर गया । खिड़की में से वह लड़की बाहर देख रही थी । मैं उसे देखता ही रहा, जब तक वह बस आँखों से ओझल न हो गई । बिलकुल ऐसी ही तो थी, मेरी रमा । जिससे मैं शादी करना चाहता था, प्यार करता था । पर एक एक्सीडेंट में सब कुछ समाप्त हो गया था पिछले वर्ष होली के बाद ही तो हमारी शादी होनेवाली थी । क्या एक ही शक्ल की दो लड़कियाँ हो सकती हैं ? कुछ समझ में नहीं आ रहा था, वह लड़की सच में रमा थी या मात्र मेरे मन का भ्रम ।

दूर से कोई

– साहित्य रत्न श्री. जेमि,
कोवै, तमिलनाडु

कपडा खरीदने गया था एक बार
कमीज हो या कुछ ब्रांड पर था नज़र
कुछ नहीं बहुत सारा ठहरा था बदलाव
दूर से कोई बोला संभल जाओ जागो ।

खाने गया परिवार सहित एक होटल पर
नाम अनेक उनमें नये लगने लगे इस बार
मन तो किया खाकर देखो कुछ नया अपार
दूर से कोई बोला पेट पालो वज़न नहीं ।

पानी पीने गया था देखा विभिन्न बोतल
रूप से अपनी ओर खींच रहे थे बोतल
एक ले जाऊँ या ले जाऊँ सब बोतल
दूर से कोई बोला ठंडा पानी पिओ रोग नहीं ।

हवा खाने गया पैदल जाने गया था मैं
जा रहे थे मेरे साथ एक नहीं होंगे हजार
आती जाती गाडियों से निकलती धुआँ
दूर से कोई बोला ज़हर पीना जाता कहाँ ?

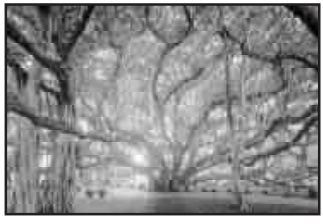

दिन भर काम तो करता हूँ जरूर थकता हूँ
रात को सोने जाना है तन को फिर जगाना है
आ गये एक नहीं सौ प्रकार के गद्दे
दूर से कोई बोला तन को मत कर गरम सोचो ।

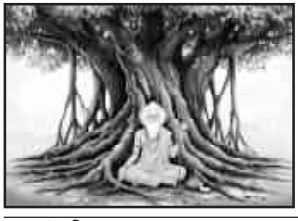

हर कदम में यहाँ सोचना पडता है आजकल
हर चीज़ में हानिकारक तत्व भरा है आजकल
अपने पुरखे जो कर गये वही किया करो अब
दूर से कोई बोला, करो वही जो किये तेरे पूर्वज ।

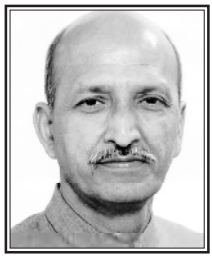

अधूरा सपना

– डॉ. अनन्त कीर्ति वर्द्धन,
मुजफ्फरनगर, उ.प्र.

चित्र हमारा कभी देखना, किसी पुराने दर्पण में,
माँ की बूढ़ी आँखों में, दादा के टूटे से चश्मे में ।
कभी देखना बचपन की आँखों में, संग खेलते थे,
फटी-पुरानी किसी एल्बम, अपनों के सपनों में ।

बचपन के भी चित्र मिलेंगे, होंगे कुछ तरुणाई के,
युवा हुए तो दौड़ रहे थे, चित्र दिखेंगे आशनाई के ।
कुछ चित्र ज़िम्मेदारी के होंगे, थोड़े लापरवाही के,
दोस्त सखा मित्रों के संग, कुछ फोटो रूठ मनाई के ।

बचपन की बचकानी हरकत, कभी पेड़ पर चढ़ जाना,
कभी बनाना रेत घरोंदे, कभी किसी के तोड़ कर आना ।
फाड-फाडकर कॉपी अपनी, पानी के जहाज़ बनाते,
चित्र अनूठे बचपन के होते, दर्पण देख देख इतराना ।

ऐसे भी कुछ चित्र मिलेंगे, बस कर्तव्य याद रहा,
परिवार खातिर जीना, दिन भर खटना याद रहा ।
अपने अधिकारों का तो, हमको कुछ भी भान नहीं,
कॉलर फटा दिख जायेगा, चित्र हमें वह याद रहा ।

कुछ चित्र ऐसे भी हैं, जो नहीं किसी को दिखलाए,
टूटे हुए सपनों के चित्र , जिनको पूरा न कर पाये ।
चित्र अधूरे अभी बहुत से, जो हमने स्वयं बनाये थे,
ख़ुशियों के भी बहुत, जीवन को प्रफुल्ल कर जाये ।

जय जय भारत देश

(देशभक्ति काव्य तरंग/गीत)

– श्री. सूबेदार कृष्णदेव प्रसाद सिंह,
मधुबनी, बिहार

जय जय भारत देश, जय जय भारत देश,
जा रहा जग में, सत्य अहिंसा का संदेश ।
शांति के पुजारी हैं शुरू से हम भारतवासी,
किसी के लिए हृदय में, ईर्ष्या न कलेश ।
जय जय भारत देश...

विश्व गुरु रहा है भारत, है हमें अभिमान,
सबसे अलग जग में, रही अपनी पहचान ।
बडी–बडी गुलामी झेली है भारत माता ने,
अब भी जीवित है, सम्मान का अवशेष ।
जय जय भारत देश...

सारी दुनिया में बज रहा है भारत काडं का,
हमारी कुशलता पर किसी को नहीं शंका ।
भारत ने सदा सभी को अपना समझा है,
कभी नहीं पहुँचाता भारत, किसी को ठेस ।
जय जय भारत देश...

बडी–बडी कुर्बानी देकर, गोरों को भगाया,
कड़ी मेहनत से अपने चमन को सजाया ।
जियो और जीने दो का नारा है देश का,
इसी से किया, इक्कीसवीं सदी में प्रवेश ।
जय जय भारत देश...

अगर सर कटता है तो, सहर्ष कटने देंगे,
किसी कीमत पर, तिरंगा नहीं झुकने देंगे ।
महासागर चरण पखारता, भारत माता का,
चाँदी जैसा तन है और सोने जैसे हैं केश ।
जय जय भारत देश...

नन्द को लाला ।

– श्री. सुनील प्रकाश भारद्वाज,
लखनऊ, उ.प्र.

गोपी कहें उद्धव सों ज्ञान न चाहिए,
आँखों में बस गयो नन्द को लाला है ।
मेरो तो ज्ञान ध्यान सारों मान-सम्मान,
गाय चराने वालो वही एक ग्वाला है ।
ब्रह्म ज्ञान न जानूँ किसी को न मानूँ,
तीनों लोकों में बस वो ही निराला है ।
वही मेरो सगुण है वही मेरो निर्गुण है,
उसकी दीवानी हर एक ब्रज बाला है ।

मोको तो चाहिए वही बंशी वारो,
चक्र सुदर्शन वारो हमको न भावे है ।
नन्द को दुलारो माखन चुराने वारो,
जो ग्वाल बाल संग गइयाँ चरावें है ।
रास रचाने वारो सबको प्यारो प्यारो,
आँखों में बसो ऐसों नहीं बिसरावे है ।
ब्रजवासी है धन्य पेड़ पाती है धन्य,
सुघर श्यामली छवि सबको सुहावे है ।

श्याम जू आये हैं जब तें ब्रज में,
आनंद को पार न पावें ब्रजवासी है ।
नन्द के लाला ने ऐसों जादू कियो,
बाबरे से हेकें रात जागें ब्रजवासी है ।
कान्हा बिन सूनों सो लागे घर द्वार,
साँवरे के पीछे सब भागें ब्रजवासी हैं ।
छोड़ के मथुरा गयो जब तें गोविन्द,
रो-रो अखियन आँसू लावें ब्रजवासी है ।

सखी री फागुन आयो

– श्री. नलिन खोईवाल,
इंदौर,म.प्र.

सखी री फागण आयो, हर्ष चहुँओर छायो ।
हिलमिल ने गलबहियाँ, कैसो रास रचायो ।।
प्रकृति उत्सव मनाएँ,मन वसंत हो जाएँ ।
सब शिकायत भूलकर, बात दिल की बताएँ ।।

सूखा-सूखा है तन, चल तर-बतर करें मन ।
बीता जाए वसंत, अंतस में खिला सुमन ।।
गाल लाल हो जाएँ, अंग में रंग समाएँ ।
सैंया पड़ गलबहियाँ, अंग-अंग महकाएँ ।।

अख्या पलक झपकाएँ, चुपके रंग लगाएँ ।
ज़रा भी लाज न आए, राज कितने बताएँ ।।
चूड़ियाँ खनखनाएँ, रात भर शोर मचाएँ ।
पल में चुराकर नज़र, दांत उँगली दबाएँ।।

नज़रें तीर चलाएँ, दिल तलक भेद जाएँ ।
बंसी बजाएँ मोहन, राधा दौड़ी आएँ ।
वसंत बहार छाएँ, फूल अधर मुस्काएँ ।
देह धूप मस्ताती, नैनन बाण चलाएँ ।।

कल

– श्री. मोहित.जे. संतोष, श्री रामकृष्ण कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड साइंस, कोवै, तमिलनाडु

कल क्या बनेगा ?
कल बनेगा काल तेरा
बिगडता जायेगा हर साल
रह जायेगा तेरा यही हाल ।
आज उसे महसूस करो
बन जायेगा तू सदा राज
सोचो इस बात पर तुम
सोचो इस बात को तुम ।
कष्टों से मत बनो मजबूर
चुनौतियों को करो मंजूर
जिम्मेदारी का करो स्वीकार
सफलता सदा करेगी इंतजार ।
मान लो अपना कर्म धर्म
निभाने लगो अपना धर्म
फिर सुन पायेगा हर कहीं
तेरी सिद्धियों का महाकाव्य ।

गज़ल

– श्री. विनय साग़र जायसवाल,
बरेली, उ.प्र.

होने कभी न देंगे इसका कहीं खसारा
औलाद से भी बढ़कर हमको वतन है प्यारा
हर शाख लहलहाये बस आरज़ू यही है
पुरखों ने ख़ून देकर गुलशन को है संवारा
हिमगिरि ने ताज बनकर बख़्शी है इसको अज़मत
सागर ने पाँव धोकर सदक़ा सदा उतारा
रखना सदा ही यारो यह बात ज़हनो–दिल में
हमने बड़े जतन से भारत का रुख निखारा
हर शख़्स इसके तन पर चंदा सितारे जड़ दे
सोचे बशर न कोई मेरा है या तुम्हारा
हर देश के ग़मों में पहुँचा है दोस्त बनकर
इसने मदद की हरदम जब–जब इसे पुकारा
लहराता है तिरंगा जो शान से फ़लक पर
कुर्बान इसपे सब हैं ज़र्रा हो या सितारा
ऐसा सबक अदू को देना है हमको साग़र
रख्खे क़दम न कोई दुश्मन यहाँ दुबारा

हिन्दी दिवस मनाओ

– श्री. चक्रधर शुक्ल, कानपुर, उ.प्र.

बोलचाल की भाषा प्यारी,
सबको जोड़ रही है ।
अन्य किसी भाषा से उसकी,
कभी न होड़ रही है ।

एक बार जो अपना लेता,
हिन्दी के गुण गाता ।
दुनिया भर में जाता रहता,
आदर कितना पाता ।।

हिन्दी दिवस मनाओ बच्चो,
हिन्दी को अपनाओ ।
कितनी अच्छी भाषा है यह,
बोल–बोल बतलाओ ।।

भगवान शिव

– श्री. वसंत,
जमशेदपुर, झारखंड

भीमाशंकर को करूँ, नमन झुका कर शीश ।
शूलपाणि संकट हरो, काशीपति गौरीश ।।

महाकाल के पद-कमल, नित उठ करूँ प्रणाम ।
मनमंदिर में भक्त के, रहिए आठों याम ।।

प्रात:काल शिव को नमन, कर प्यारे कर जोड़ ।
लग जा फिर सत्कर्म में, चिंता सारी छोड़ ।।

बैठे जो कैलाश पर, बिछा बाघ की छाल ।
चरण रेणु उस रुद्र की, तिलक लगाऊँ भाल ।।

सेतुबंध रामेश्वरम्, शिव का अनुपम धाम ।
नमन राम को शिव करें, शिवशंकर को राम ।।

दिन-दिन ढलता जा रहा, यौवन भोलेनाथ ।
अब तो दर्शन दीजिए, खड़ा जोड़ मैं हाथ ।।

नमन करूँ शितिकंठ को, शुभ यह सावन मास ।
बिना दरश प्रभु आपके, मन है बहुत उदास ।।

जीवन है अनमोल

– श्री. गजानन पाण्डेय, हैदराबाद, तेलंगाना

सुख-दुख आते-जाते
ज्यों पतझड़ और सावन
धूप-छांव का खेल निराला
हमें परखता हर पल ।
जीवन न रुकता है
जैसे नदियों का जल
हम भी चले, तुम भी चलो
हर पल को जी ले ।
कल का क्या भरोसा है ?
सच है आज,
जैसे धरती और आकाश
प्रेम का नाता, सबसे अच्छा
जैसे राधा और श्याम
जीवन है अनमोल
हम समझे इसका मोल ।

अफसरों की शहादत का शोर

– श्री. संजय एम. तराणेकर,
इन्दौर, म.प्र.

आज का सिनेमा युद्ध, शहादत व सेना केंद्रित,
कहानियाँ पूरी तरह होना चाहिए थी विकेंद्रित ।
देशभक्ति के नाम पर बन रही फिल्मों का शोर,
उस असली सैनिक की आवाज़ पहुँचे चहुँओर ।

सीमा पर खड़ा होकर लड़ता रहता है सिपाही,
बॉर्डर की ज़मीं 1–1 इंच की रक्षा देता गवाही ।
माना हर पात्र के साथ न्याय करना संभव नहीं,
लेकिन उसे क्रेडिट तो बड़े पर्दे पर दो हर कहीं ।

अब कहानी कहने के तरीके चाहे बदल गये हो,
'चरित्र–चित्रण' में लेखक–निर्देशक का न्याय हो ।
सैनिकों की बहादुरी में न हो अफसरों का शोर ?
उनकी शहादतों के साथ न हो अन्याय घनघोर ।

गज़ल (समय के महत्व को दर्शाते हुए)

– डॉ. पवन कुमार पाण्डे,
निजामाबाद, तेलंगाना

पकड़ में ये किसी की कब, कहो आता कभी है क्या,
किसी का एक–सा ही यह, कहो रहता कभी है क्या ।

अथक गतिशील इसका, मार्ग तो निर्बाध ही रहता,
तटों के मध्य निज के यह, कहो थमता कभी है क्या ।

गँवाते जो इसे यूँ ही, कहीं के वो नहीं रहते,
चले यदि साथ इसके जो, कहो ढहता कभी है क्या ।

न प्रिय कोई कभी इसका, किसी से वैर ये रखता,
किसी को मानकर अपना, कहो रुकता कभी है क्या ।

कभी बिककर कलम तक, झूठ को भी सच बताती है,
समय ऐसा असत को सत, कहो लिखता कभी है क्या ।।

मैं कांटा नहीं फूल बनना चाहता हूँ

– श्री. तेज नारायण राय, दुमका, झारखंड

मैं फूल बनना चाहता हूँ कांटा नहीं
अक्सर लोग यहाँ
फूल नहीं, कांटा बनना चाहते हैं,
पर मैं–
कांटा नहीं, फूल बनना चाहता हूँ ।
कांटे तो पैरों में चुभ जाते हैं,
उँगलियाँ इस कदर फाड़ देते हैं
कि लहू नदी–सा बहने लगता है ।
असहनीय पीड़ा इतने देते हैं ये कांटे,
कि देह, दर्द से सिहर उठती है ।
लोगों के मस्तिष्क को,
इस तरह छिन्न–भिन्न कर देते हैं
कि थक–हारकर वे ज़मीन पर बैठ जाते हैं,
माथा पकड़कर कहते हैं –
यह क्या हो गया ?
वही सोचते–सोचते
उसका हाथ से फिसल जाती है
समय की घड़ी ।
दुख की बात तो यह है
कि उस दिन उनका सूरज भी
असमय ढल जाता है,
और आँखों के सामने
मंडराने लगती है
काली, घनी छाया–
जो संध्या नहीं,
उसके रास्ते का काल होता है ।
वह काल
जो उनके आगे बढ़ते कदमों को रोक देता है,
सपनों को चूर–चूर कर देता है ।
पर फूल
फूल तो फूल होता है ।
वह गली–मोहल्लों को महकाता है,
हर आँगन को
खुशबू से भर देता है,
और घर–
घर नहीं, स्वर्ग–सा लगने लगता है ।
उपवन में फूल
झुक–झुककर भँवरों को बुलाता है,
मधुर रस पिलाता है,
भूखे भँवरे की
भूख मिटाता है ।
नयनों में चमक भर देता है,
थके–हारे मनुष्यों के
दुख हर लेता है ।
इतना ही नहीं–
फूल माला में गुँथा जाता है,
लाशों पर चढ़कर
उन्हें भी
सुंदर और शांत बना देता है,
कि लगता है–
अभी उठकर बातें करेगा ।
फूल
दुनिया को अच्छे कर्मों का
एक सुंदर संदेश दे जाता है ।
न जाने कितने
भले काम कर जाता है और यह फूल ।
इसीलिए–
मैं कांटा नहीं,
फूल बनना चाहता हूँ ।

SHABARI SIKSHA SANSTHAN
Shabari Palace, 193, Second Agraharam, Salem - 636 001.
& 0427-4265414 0427-4552100
Visit us @ https://shabari.in

A glance about Vani Vikas

Answers for the Frequently Asked Questions.....

Application forms for Vani Vikas Exams will be issued only to the members of Shabari Siksha Sansthan. Annual membership fee Rs.100/-

Why Vani Vikas exams are conducted ?

The name **Vani Vikas** itself explains us clearly that, Vani Vikas is to motivate the non Hindi speakers to speak in Hindi.

Who conduct the Vani Vikas exams ?

The Vani Vikas exams are conducted by **SHABARI SIKSHA SANSTHAN**.

Is Vani Vikas, written exam or oral exam (Vivavoce) ?

Vani Vikas exams motivate the students to speak Hindi, this is not a written exam.

What is the minimum age limit for Vani Vikas exam ?

One who has completed 8 years shall appear for the exam. Those who are participating in the Vani Vikas first level must attach the Xerox copy of the birth certificate.

What is the basic educational qualification for Vani Vikas exam ?

There is no basic educational qualification for Vani Vikas exam, self-interest is enough.

During which months that Vani Vikas exams are conducted ?

Vani Vikas exams are conducted in January, April, July and October.

How many levels are there in Vani Vikas exam ?

The Vani Vikas exam consists of EIGHT levels.

Is there any separate text book for Vani Vikas exam ?

Yes, Vani Vikas exam consist of seperate text books for all the EIGHT levels.

Is it must to take part in Vani Vikas exam level by level ?

Yes, you are suppose to do this exam level by level only. You can't do more than one level at the same time, in the same way you can't able to apply directly to second level or any other level. Those who apply for second level to eighth level must enter the 10 digit register number (passed previous exam number) in the exam application form.

Can we know about the exam centres for Vani Vikas ?

If you have 30 students to appear for the exam you will have your own centre. If the students number (count) is between 10 to 29 you have to pay rupees 500 as exam centre charge. **In your centre few more students from outside may join with you without any prior information from us**. The PAID exam centre charge will never be returned.

A minimum 10 students must be there for a Batch or Term to apply for Vani Vikas Exam (January or April or July or October).

Does the Vani Vikas exam have the mark list and certificate ?

Within 30 days after the exam you will receive the mark list and within 60 days after the exam you will receive the Certificate. Results will be published in https://shabari.in.

Who will conduct the Vani Vikas exam ?

Experienced and efficient teachers will conduct the Vani Vikas exam.

Is there any sample questionnaire for Vani Vikas exam ?

Model question papers are at the end of the Vani Vikas text book.

Is Vani Vikas worth for students ?

By improving Hindi it is going to be definitely useful for the students and for their future carrier.

Details of the books :

Name of the Exam	Book
Vani Vikas Grade - 1	₹ 250.00
Vani Vikas Grade - 2	₹ 260.00
Vani Vikas Grade - 3	₹ 270.00
Vani Vikas Grade - 4	₹ 280.00

Name of the Exam	Book
Vani Vikas Grade - 5	₹ 290.00
Vani Vikas Grade - 6	₹ 300.00
Vani Vikas Grade - 7	₹ 310.00
Vani Vikas Grade - 8	₹ 320.00

Kindly pay the Vani Vikas books charges only through our web portal @ **https://shabari.in**

A minimum 10 students must be there for a Batch or Term to apply for Vani Vikas Exam (January or April or July or October).

महान संत शिव भक्त – तमिल नायनमार

चेरमान पेरुमाल नायनार

– विद्या सागर आर.जे. संतोष कुमार, कोवै, तमिलनाडु

चेर वंश के एक परिवार में कोडुंगालूर प्रदेश में जन्म लिए भाग्य से
नाम था उनका पेरुमाल कोदैयार सब जानते थे उनको इस नाम से
बचपन से बहुत ही महान शिव भक्त थे शिव शिव शिव शिव कर जीते थे
दूसरी चीजों में कभी बनी नहीं रही रुचि सिर्फ शिव की पूजा में लगते थे
शिव भक्ति के बढ़ने पर राजमहल छोड़कर आए तिरुवन्जयकलम
शिव मंदिर में सेवा में लगे करते रहे पूजा–पाठ और अन्य सेवा
मानव तो मानव है चाहे वह शिव भक्त क्यों ना है बात सही रही
राज्य इन्होंने त्यागा था राजा का पद इनको कभी नहीं त्यागा था ।

सेंगोरपोरयण चेर राज्य का राजा था राज्य छोड़कर भक्ति में लगा
राजा के बिना राज्य क्या ठहरता है ? वह तो सिर के बिना जड़ है
सारे मंत्री मंदिर में आए पेरुमाल कोदयार के सामने हाथ जोडे
शिवाज्ञा है तो नहीं टालूँगा शिव के कहने पर राजा बन जाऊँगा
शिवजी से आज्ञा पाकर उनके इशारों पर राजा बने राज्य के
हर रोज नियमित पूजा करना शिव की आराधना करना चलता रहा पूजा होती रही...
शिव भक्तों की सेवा करते राज्य का कारोबार भी करते
शिव उनका नाम लेते–लेते हर रोज अपना कार्य ढंग से वे निभाते ।

पूजा के अंत में वहाँ से उठने के पहले उनको आवाज वक्त सुनाई देती
नटराज जो महादेव का नृत्य रूप है उनके घुँघरू तब बजता
घुँघरू की आवाज उन्हें वह सुख देती जिससे पूजा सफल माना जाता
एक दिन पूजा के बाद घुँघरू की आवाज नहीं आई सुन नहीं पाए
अपनी पूजा में क्या कमी रही राजा उसे समझ नहीं पाया बहुत पछताया
अपनी गलती का सजा खुद देने के लिए अपना तलवार उठाए
जीना क्या जीना है जब शिवजी की पूजा ढंग से नहीं हुआ
शिव प्रीति के बिना इस जीवन को आगे बढ़ाना है क्या ?

अपने आप पर वार करने ही वाले थे आवाज सुनाई दी
अरे अब रुक भी जाओ घुँघरू की आवाज सब अच्छे से सुनाई दी
आवाज यह कहकर उन्हें शांत की कि वक्त के गाने में डूब गया था
सुंदर मूर्ति जो गाता है वह बहुत ही सुंदर होता है मधुर होता है
उस मधुरता में मन यह पूरा खो गया मैं खुद उसमें डूब गया
भक्त का गाना मुझे सुख के सागर में डुबा दिया बहा दिया
तेरी याद आई तो मैं अभी घुँघरू का आवाज सुना दिया
भगवान के कहते समझ गए सुंदर मूर्ति के गान का विशेष ।

मिलने गए तुरंत सुन्दरमूर्ति नायनार उससे पूरे मन से
मिलकर खुशी प्रकट किए तब सुंदर मूर्ति नायनार भी इनसे
मित्रता पनपी दोनों आते-जाते मिलते रहते एक दूसरे से प्यार करते
शिव ही उन्हें मिलाए थे शिव भक्ति उन्हें बहुत पास लाई थी
सुंदर मूर्ति नायनार शिव के बहुत ही अधिक प्रिय भक्त थे
उनके गाने सुनकर महादेव शिव अपने आप को भी भूल जाते थे
महादेव को लगा अब सुंदर मूर्ति को पास बुला लेना है अपनाना है
सुंदर मूर्ति को अपने पास ले आने शिव ने ऐरावत को भेजो ।

ऐरावत पर चढते-चढते कैलाश की ओर चलते-चलते याद आई मित्र की
साथ होते चेरमांन कितना अच्छा होता मन मेरा यह मित्र को देख खिल जाता
अपने मित्र की बात समझ गए तुरंत अपने घोड़े पर निकल गए
ऐरावत पर अपने मित्र को चलते देखा घोड़े के खाद पर पंचाक्षरी सुनाए
घोड़ा तब उड़ने लगा मित्र के साथ वह भी कैलाश पहुँच गया
शिव के सामने जब पहुँच पाए चेरमान नायनार शिव की अनुमति लिए
शिव की वीथि यात्रा पर रचित अपना एक गाना सुनाए
शिव उन्हें अपनाकर शिवगणों का नेता चेरमान को बनाए ।

सदेह स्वर्ग पहुँचकर, शिव मिले चेरमान ।
शिव गणों का नायक बन, करा दिए भगवान ।।

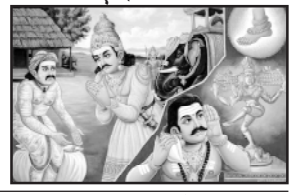

वीर सावरकर जी

– श्री. राम शंकर सिंह

जय वीर विनायक सावरकर, स्वातंत्र्यवीर इतिहासकार,
वे क्रांतिदूत आजादी के, चिंतक, कवि, लेखक, नाट्यकार ।
संलग्न समाज सुधारों में, वे राष्ट्रवादियों में महान,
भारत की गरिमा के रक्षक, है कोटि-कोटि उनको प्रणाम ।।

अँग्रेज खौफ खाते उनसे, रणनीतिकार थे बुद्धिमान,
संगठन शक्ति बढ़ती जिससे, उस तर्कशक्ति में थे महान ।
दो-दो आजीवन कैद उन्हें, थी सजा उन्हें काला पानी,
भूखे-नंगे बेड़ी जकड़े, कोल्हू खींचे वे बलिदानी ।।

यदि रूढ़िवाद या छुआछूत, तो उसका सदा विरोध किया,
हिंदुत्व एक जीवन पद्धति, सावरकर ने संदेश दिया ।
संस्कृति अखंड भारत की हो, एकता हेतु संघर्ष किया,
भारत चहुँमुखी विकास करे, इस हेतु नवीन विमर्श दिया ।।

वे आजादी के दीवाने, अति प्रखर राष्ट्रवादी थे वे,
भारत हो पूर्ण स्वतंत्र राष्ट्र, पहले कहनेवाले थे वे ।
आयात विदेशी कपड़ों को, पहले जलवानेवाले वे,
थे ब्रिटिश राज्य के राजा का, प्रतिकार करानेवाले वे ।।

बंदीगृह की दीवारों पर, लिख कील-कोयले से कविता,
जब निकले कविताएँ रटकर, बाहर आकर तब उन्हें लिखा
थीं दस हजार की संख्या में, जो पंक्ति रटे थे सावरकर,
जब लिखे क्रांति-साहित्य बना, अँग्रेज़ चिढ़े थे घबराकर ।।

उनकी स्नातक की उपाधि, अँग्रेज़ों ने वापस ले ली,
अधिवक्ता पेशा प्रतिबंधित, कृतियों पर उनके रोक लगी ।
अँग्रेज़ यातना दिए बहुत, पर सावरकर रणधीर रहे,
भारत माँ के सच्चे सपूत, चेतना-क्रांति बलवीर रहे ।।

मनका-मनका बोलेगा

– श्री. कार्तिकेय कुमार त्रिपाठी
'राम', इन्दौर, म.प्र.

असमंजस में मत रहना तुम,
भोले पार लगाएँगे,
मनका-मनका बोलेगा फिर,
मन का सार बताएँगे ।
असमंजस में...
नहीं कही कोई रोड़ा होगा,
मन भोले से जोड़ा होगा,
भक्ति का रस थोड़ा-थोड़ा,
मन पवन वेग-सा दौड़ा होगा।
असमंजस में...
भाग लिखा किसका क्या जाने,
अंतस है क्या-क्या पहचाने,
भोले के रंग में जो डूबा,
गाएगा वो नए तराने ।
असमंजस में...
मात्राओं में बंधी नहीं है,
भोले की कोई सूरत,
जन-मन में जो छवि गढ़ी है,
वो ही है भोले की मूरत ।
असमंजस में...
आओ भोले की दुनिया में,
नाम उचारें भोले का,
मन भर की खुशियों में झूमें,
मनका बस एक भोले का ।
असमंजस में...

श्रृंगार भोले का

– श्री. कार्तिकेय कुमार त्रिपाठी
'राम', इन्दौर, म.प्र.

मैं श्रृंगार करूँ भोले का,
तन-मन अर्पण करके,
छूट जाए सब दुनियादारी,
भोले-भोले करते ।
मैं श्रृंगार करूँ भोले का...
फिर भोले के साथ बैठ कर,
अटकन-बटकन खेलूँ,
कान पकड़कर भोले का फिर,
होले-होले छोड़ूं ।
मैं श्रृंगार करूँ भोले का...
खेल-खेल भोले थक जाएँ,
नई जुगत अपनाऊँ,
लकड़ी की काठी गा-गाकर,
मैं खुद घोड़ा बन जाऊँ ।
मैं श्रृंगार करूँ भोले का...
भूख लगे जब भोले को तो,
गीतों में उलझाऊँ,
चंदामामा दूर के गाकर,
भर-भर खीर खिलाऊँ ।
मैं श्रृंगार करूँ भोले का...
आँखों में जब नींद दिखे तो,
फिर भोले को थपकाऊँ,
भोले सो कर उठ जाएँ तो,
फिर मन भर कर बतियाऊँ ।
मैं श्रृंगार करूँ भोले का...

फागुन की मस्ती

– श्री. उदय किशोर साह, बाँका, बिहार

झूमता आया फागुन की मस्ती
बहारों की रानी की है ये बस्ती
पूरवाई ने ली है आज अंगड़ाई
महुवा फूल जंगल को महकाई

फाग की राग गुँज रहा चहुँओर
गली गली में घूम रहा चित्तचोर
गाँव की गौरी पे डालना है डोर
ये मदमस्त है फागुन की भोर

ढोल नगाड़े झांझर का ये शोर
गोरी की तन रंग में डूबा पोर–पोर
श्याम श्वेत भी लगता अब गोर
फागुन के काँधे पे मस्ती का दौर

रंग विरंगे खिला पलाश के फूल
गुलाब बैठा है बिछा कर शूल
बेला चमेली डाली पे खिल आई
गाँव–गाँव फाग की मस्ती है छाई

कितना सुन्दर सपना सलौना
मांदर की ताल पे झूम रहा सगीना
छुप छुप कर रंग खेले है हँसीना
भंग की नशे में आज है यहाँ जीना

खतरे में है आत्मसम्मान

– श्री. उदय किशोर साह, बाँका, बिहार

निकल चलो अब इस बस्ती से
बेईमानों की बदनाम कश्ती से
शर्मसार हो गया है मान सम्मान
अब ना बचेगा यहाँ आत्मसम्मान

हर मोड़ पे जहाँ खड़ा है लुटेरा
कैसे करूँ उस बस्ती में मैं बसेरा
सभ्य लोग का जीना हुआ हराम
कोई राह दिखलाओ मेरे भगवान

लुट खसोट की खुल गई है बाजार
जहाँ बिक रही है ओछी संस्कार
समाज में फैल रही तेजी से विकार
कैसे हो इन चोरों का जग से बहिष्कार

यही सोच कर आत्मा ज़ार–ज़ार है रोता
लुट खसोट बनी धनवानों की स्रोता
अट्टालिका पे चढ़ कर हँस रहा है गुमान
निश्चित ही ये सब हो जायेगा गुमनाम

मानव हो शराफत से कर लो यहाँ प्यार
धर्म ईमान से मत कर भाई तकरार
अन्त दिन जब आयेगा पछतायेगा यार
मेरी सोच पे करना एक बार तू विचार

होली

– श्री. रवीन्द्र कुमार राणा,
बुलंदशहर, उ.प्र.

जीवन में भरो इंद्रधनुषी रंग,
समता स्नेह सदभाव बढ़ाओ ।
नेक व उच्च विचार विमर्श हो,
राक्षसी दानवी दुष्टता हटाओ ।।
फूलों युक्त रंग बिरंगी होली में,
कुरीति विकृतियों को मिटाओ ।
मन मस्तिष्क निर्मल हो हमारा,
घृणा राग वैमनस्य द्वेष हटाओ ।
ढोल मृदंग थाप पर प्रेम पूर्वक,
सुख समृद्धि की होली मनाओ ।
प्रेम स्नेह के रंगों में सराबोर हो,
वसुधैव कुटुम्बकम को अपनाओ ।।
पवित्र आत्मिक सात्विक मन हो,
चंदन रोली अबीर गुलाल लगाओ ।
होली पर टेसू व सरसों के फूलों से,
मित्रता ममता की सुगन्ध फैलाओ ।।
हृदय में निर्मलता पवित्रता हो,
सुख शान्ति के पुष्प खिलाओ ।
मादकता नीरसता चहुँओर छाई,
कलुष कटुता कलंक जलाओ ।।
प्रेम सौहार्द के स्नेही रंग भरो,
समग्र दूरियाँ दिलों से हटाओ ।
लौटे बरसाने की पवित्र लट्ठ होली,
मनमुटाव विद्वेष धरा से मिटाओ ।।

फिर वसंत ऋतु आई

– श्री. रवीन्द्र कुमार राणा,
बुलंदशहर, उ.प्र.

ज्ञान देवी माँ सरस्वती कृपा से,
प्रकृति फिर वसंत ऋतु लाई ।
पीत वस्त्र धारण करके सबने,
वसंत पंचमी श्रद्धा से मनाई ।।

वसंती रंग का हुआ आगाज,
फूलों ने अनूठी छटा दिखाई ।
सरसों की लहराती फसलें,
मधु मक्खी तितली मंडराई ।।

खिले पुष्प बहुरंगी चहुँओर,
फैली सुगंध प्रकृति मुसकाई ।
कल-कल, छल-छल बहती,
नदियों में है निर्मलता आई ।।

छाया है पुलकित मधुमास,
कोकिला ने गीत मल्हार गाई ।
वसंत है पर्यावरण अनुष्ठान,
सांस्कृतिक वाणी नाद पाई ।।

पीत रंग उन्नति हर्ष का सूचक,
रवीन्द्र ने नैसर्गिक उपहार बताई ।
प्रकृति का सौम्य सौंदर्य रूप देख,
घर-उपवन वसंती पताका लहराई ।।

होली आयो रे मोहन

– श्री. गोपेंद्र कु सिंहा गौतम,
औरंगाबाद, बिहार

होली आयो रे मोहन !
मोर मन तरसे, नयन बरसे ।
कहाँ रही गयो, कहाँ रही गयो
मोहन फिर, मारो दूर घर से !

कवन हमसे भूल भयो,
कवन भयो अपराध ।
काहे तोहर खिन्न मिजाज
मोहन आजकल हमसे !

तोह बिन नाही लागे मनवा,
मोर मनमीत रे मोहनवा ।
चहुँओर उड़ रंग-गुलाल,
पर मोर बरसेला नयनवा ।

आई जाहूँ, आई जाहूँ,
आई जाहूँ मोर मोहनवा ।
तोह बिन अधूरा हवे,
मोर तन-मन बदनवा ।

अबरी नाही जे अयब मोहन
हम चल आइब तोहर ठिकनवा ।
नहीं सुनब कोई आरज़ू-विनती
नाहीं मानब कोई कहनवा ।

होली आयो रे मोहन !
मोर मन तरसे, नयन बरसे ।
कहाँ रही गयो, कहाँ रही गयो
मोहन फिर, मारो दूर घर से !

नवसंवत्सर में

– श्री. अशोक आनन,
शाजापुर, म.प्र.

हो शुभ ही शुभ, नवसंवत्सर में ।
अस्त हो न बुध, नवसंवत्सर में ।
सुदामा को भी वही मान मिले –
हो सखा कृष्ण, नवसंवत्सर में ।
काव्य का नित्य हम भंडार भरें –
रच नये छंद, नवसंवत्सर में ।
मन से फूलों की महक बिखेरें –
घोल मकरंद, नवसंवत्सर में ।
नयी भोर का कर वंदन, छिड़कें –
कुंकुम, अक्षत, नवसंवत्सर में ।
मन-मंदिर में मूरत हो माँ सम –
चंदन-सुगंध, नवसंवत्सर में ।
चले मलय गिरि से महका भू को –
मलय पवन मंद, नवसंवत्सर में ।
काट हृदय के अब हर बंधन को –
रहें स्वच्छंद, नवसंवत्सर में ।
बृज की कुँज गलियों-सी गली न हों –
हृदय की तंग, नवसंवत्सर में ।

बहका बसंत है

– डॉ. अर्जुन गुप्ता 'गुंजन', प्रयागराज, उ.प्र.

अवसान शिशिर के आया ऋतुराज साज,
बागों बगानों में बस बहका बसंत है ।

सरसायी सरसों से लगती है वसुधा ये,
पीत पट अच्छादित दिग और दिगंत है ।

बहकी हवायें और महकी–सी रंगत ये,
बालियाँ ये गेहूँ की लगती रसवंत है ।

डाल–डाल पात–पात गुंजारित गुंजन यूँ,
कोयल की कूकों से मौसम खुशवंत है ।

अमराई बौराई तितली अब इठलाई,
मंजुल मराल नित करता कलोल है ।

रघुवर के वर्ण–सम अलसी का पुष्प ये,
मदमाते मौसम में जगती का बोल है ।

टेसू के सुर्ख सुमन लगते हैं जैसे नित,
लाल रंग चुनरी में सिमटा भूगोल है ।

चंचल चकोर नित लखता सुधाकर को,
बासंती मौसम में यौवन अनमोल है ।

लकड़ी...

– श्री. मनीष उपाध्याय, नेहू, शिलांग

लकड़ी के व्यापारी को
हर पेड़ में अपने काम का,
कुछ न कुछ लकड़ी दिख
जाता है,
परखी नजरे हर वक्त अपने
मुनाफे को देखती है,
दिमाग में हर क्षण ज्यादा से
ज्यादा माल इकठ्ठा करने का
भूत सवार रहता है,
वो चाहता है दुनिया के तमाम
पेड़–पौधों को काटकर अपने
आंगन में सजाने को,
चढते–उतरते भाव के बीच
मनमानी दाम कमाने को,
देखिए आपके फुलवारी से कोई
पेड़ों को काट कर न ले जाए,
आस–पास की कोई हरियाली
चुरा कर न ले जाए,
वो सभी लोग तो इसे बेच कर अपनी
तिजोरियाँ भर लेंगे,
लेकिन कल को जो बच्चे आएँगे
उनको उपहार स्वरूप क्या आप देंगे ?
झूला, आम, जामुन और बचपन की
सुखद स्मृतियाँ फिर कहाँ से आप
उन्हें देंगे ?

अक्सर एक व्यथा ही यात्रा है मेरी

– डॉ. अशोक,
पटना, बिहार

सूनी राहें,
कदमों में बोझ लिए,
मन भटकता ।
दर्द की छाया,
साथ चलती हर पल,
राह न बदले ।
टूटे सपनों की,
गूँज सुनाई देती,
अंतर में चुप ।
अकेला पथिक,
सफर में खोया हुआ,
खुद से दूर ।
सन्नाटा गहरा,
शब्द भी थम से जाएँ,
पीड़ा बोलती ।
धूप में जलना,
छाँव भी दूर लगे,
यात्रा कठिन ।
बीते हुए पल,
स्मृतियों में उलझे,
मन थक जाता ।
आँसू की धार,
चुपचाप बहती रहे,
कोई न जाने ।
आशा की किरण,
कभी–कभी दिख जाती,
फिर ओझल हो ।
रात का अँधेरा,
सपनों को ढक लेता,
मन अकेला ।
चलते ही रहना,
यही नियति बन गई,
थका मुसाफिर ।
व्यथा ही साथी,
यात्रा का एक सत्य,
जीवन पथ पर ।

प्रकृति की गोद में ले सुकून

– डॉ. अशोक,
पटना, बिहार

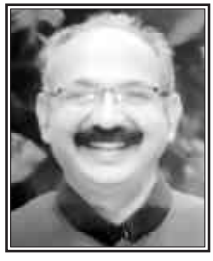

शीतल हवा
पत्तों की सरगम में
मन मुस्काए
नीला गगन
सपनों को देता है
अनंत दिशा
नदी की धुन
बहती हुई कहती
छोड़ो विषाद
हरी घास पर
ओस की बूँदों में
जीवन झिलमिल
चिड़ियों का गान
सुबह की किरणों संग
आशा जगाए
पर्वत शांत
धैर्य का पाठ पढ़ाए
अडिग खड़ा
सूरज की लौ
अंधियारा हर लेती
विश्वास जगाए
साँझ की लाली
थके मन को देती
मधुर विश्राम

गीत बहारों के गाते हुए मुस्कुराया वसन्त

– श्री. टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला',
घोटिया-बालोद, छत्तीसगढ़

आज निसर्ग सजाते हुए,
आया वसन्त ।

सुर्ख वर्ण अरुणाचल पर ।
स्वर्णिम किरणें नीलपटल पर ।
कुमकुम सी आभा बिखराती,
शीतल हवा स्वतंत्र पहल कर ।
चहुँदिशि महकाते हुए,
छाया वसन्त ।

मदमस्त हुए तरुदल देख ।
रजकण उड़ते हर पल देख ।
विहगवृंद की जलक्रीड़ा से,
तरंगित हुए सर-जल देख ।
गीत बहारों के गाते हुए,
मुस्कुराया वसन्त ।

अमराई पर छाया यौवन ।
कोयल के संग गाया उपवन ।
टेसू की चटक छवि देख,
सेमल को उकसाया कानन ।
देख भौरों को गुनगुनाते हुए,
इठलाया वसन्त ।

मुझे पसंद है...

– श्री. मनोज शाह 'मानस',
नई दिल्ली

मुझे लाल रंग पसंद है
मुझे तुम्हारा संग पसंद है
मुझे गुलाब पसंद है
जो चांद तुम देखते हो
वो चांद पसंद है... !

बल्कि और कहूँ... !
मुझे तुम पसंद हो
तुम्हारे संग की
साथ पसंद है... !

प्रेम पसंद है
प्रेम के समस्त
सप्ताह, महीना
साल पसंद है... !

मुझे वह सब पसंद है
जो प्रेम से जुड़ा होता है
कोमल मन से जुड़ा होता है... !

और फिर...,
प्रेम की कदर होती है
प्रेम की गरिमा को
कायम रखा होता है... !

बासंती दोहा छंद

– श्री. पंकज शर्मा 'तरुण',
पिपलिया मंडी, म.प्र.

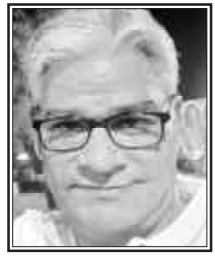

मन भावन सी चल रही, मद से भरी समीर ।
मन मयूर करने लगा, हो कर नृत्य अधीर ।।

अमराई मदमस्त है, बोरा गया पलास ।
पपीहा पी पी गा रहा, हो कर बहुत उदास ।।

कामदेव कर में लिए, घूमे तीर कमान ।
सज्जनता के बदल गए, मानो सभी विधान ।।

वाग्देवी ने छेड़ दिए, मन भावन से साज ।
सुन कर मीठे राग को, झूम उठा ऋतुराज ।।

भगवा धारी हो गया, जंगल का अब रूप ।
मादाएं रानी लगें, नर सब लगते भूप ।।

सेमल भी खेले तरुण, पुष्पित हो कर दाव ।
कंटक से कीला मगर, समझे खुद को राव ।।

सुन कोकिल के गीत को, कागा भुला कांव ।
खोज रहा वन में भटक, यह पीपल की छांव ।।

गीतिका

– श्री. पंकज शर्मा तरुण,
पिपलिया मंडी, म.प्र.

मंजर अब बदले से लगते ।
शहर अब उजड़े से लगते ।।

महक नहीं आती फूलों में ।
खार बहुत तीखे से लगते ।।

सौंधी माटी महक खो रही ।
हैं गन्ने फीके से लगते ।।

रंग तितलियों के उड़े हुए ।
पंख हैं छिले जैसे लगते ।।

मंदिर में लगती है बोली ।
अब दर्शन विरले से लगते ।।

बाना बदला है सड़कों का ।
बदन जहाँ पिघले से लगते ।।

वस्त्र हीन ईमान घूमता ।
हैं राजा बहरे से लगते ।।

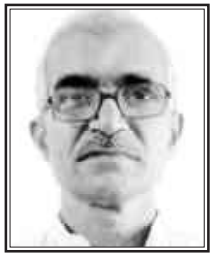

रंग भर दो आज फिर तुम

– डॉ. भगवान प्रसाद उपाध्याय,
प्रयागराज, उ.प्र.

रंग भर दो आज फिर तुम
एक सूखी तूलिका में,
सिद्ध कर दो आज खुद को
एक नूतन भूमिका में ।

शब्द इसने कब उकेरे
ज्ञात इसको है नहीं
शौर्य का सूरज उगा कब
प्रात जिसमें है नहीं

अल्पना फिर से सजा दो
इस पुरानी वीथिका में
रंग भर दो आज फिर तुम
एक सूखी तूलिका में

नैराश्य के बादल घनेरे
छाए हुए हैं जिन दृगों में
सृजन की आशा जगा दो
सो गए जो उन दृगों में

भावना का तेल भर दो
पुनः खाली वर्तिका में
रंग भर दो आज फिर तुम
एक सूखी तूलिका में

स्वयं सार्थक बन सको तो
वन्दन तुम्हारा है
राष्ट्र हित चिंतक बनो तो
अभिनंदन तुम्हारा है

प्रेम के कुछ शब्द दे दो
नेह की उस पत्रिका में
रंग भर दो आज फिर तुम
एक सूखी तूलिका में

माँ का आशीर्वाद

– श्री. तरुण कुमार दाधीच,
उदयपुर, राजस्थान

माँ मुझको बचपन का गीत सुना
जो अंतरमन को खुश कर जाये

माँ मुझको स्नेह की थपकी दे जा
जो मेरे चित्त को चंचल कर जाये

माँ मुझको उसी प्यार से डांट दे
प्रगति के पथ पर कदम चलते जाये

माँ तेरे ऋण से कभी मुक्त नहीं होऊँ
तेरे आशीर्वाद से जीवन चलता जाये

जय माँ शारदे

– श्री. राम लखन शर्मा अंकित, ग्वालियर, म.प्र.

जानकी रह न सकी चुपचाप ।
लगीं करने माँ घोर प्रलाप ।।
उठी फिर अंतर मन में ज्वाल ।
नहीं खुद को माँ सकी सँभाल ।।

छिपे वृक्षों में पवन कुमार ।
दशा माता की आप निहार ।।
लगे करने इस भांति विचार ।
देखकर माता की मनुहार ।।

मात का ऐसा अग्नि सवाल ।
कहीं ये प्रकट न कर दे ज्वाल ।।
हुए जब विकल अंजनी लाल ।
अंगूठी दी तत्क्षण ही डाल ।।

मुद्रिका को समझीं अंगार ।
उठाने बढ़ीं मात साभार ।।
मनोहर जिसका हर आयाम ।
बीच में लिखा राम का नाम ।।

हुईं आनंदित मात अपार ।
नए कुछ पैदा हुए विचार ।।
हुईं थीं जिनके मात अधीन ।
रहीं कुछ देर उन्हीं में लीन ।।

अभिमान शोभा नहीं देता है

– विद्यावाचस्पति डॉ. कर्नल आदि शंकर मिश्र 'आदित्य', लखनऊ, उ.प्र.

ज़िन्दगी का तराना कभी भी
अपना स्वरूप बदल देता है,
इसलिए हमें किसी तरह का
अभिमान शोभा नहीं देता है ।

जब सफलता बुलंदियों पर
पहुँचा देती है, अच्छी बात है,
उसके बाद गुनाह करना तो,
इंसान का बहुत बड़ा पाप है ।

सारे विवाद खत्म करने के लिये
आसान प्रक्रिया अपनानी चाहिए,
हमारी गलती नहीं भी हो तो भी,
हाथ जोड़ माफ़ी माँगनी चाहिये ।

कविता या लेख जो उपज है,
उस राजनीतिक विवाद की,
मुझे ऐसी रचना में रुचि नहीं है,
इंसान खिंचाई करे इंसान की ।

अच्छा काम सबको दिखता है,
आदित्य ये स्वीकारना अच्छा है,
धर्म पर राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता
से दूर रहना हमारे लिये अच्छा है ।

रंगो की बहार में

– श्री. बद्री प्रसाद वर्मा अनजान,
गोरखपुर, उ.प्र.

मन नीला पीला हुआ
रंगो की बहार में ।
कुर्ता पाजामा गीला हुआ
रंगो की बरसात में ।

घर से बाहर आ कर देखा
हुड़दंगो की टोली ।
खूब जोगिरा गा रहे थे सब
कर रहे थे खूब हँसी ठीठोली ।

गाल पर पुत गए सबके
रंग और अबीर गुलाल ।
होली के दिन आज सभी के
बुरा हो गया हाल ।

भांग के नशे में आज
सब नाच गा रहे थे ।
एक दूजे को रंग से
खून नहवा रहे थे ।

आज मगन नजर आ रहे
देखो देवर भौजाई ।
आज के इस होली में
सब ले रहे थे अंगड़ाई ।

माँ कहती है

–श्री. मोनिका डागा 'आनंद',
चेन्नै, तमिलनाडु

बच्चो पढ़ो तुम मन लगाकर,
माँ कहती है हमें ये अक्सर,
तुम हो साहसी ताकतवर,
भगाओ परीक्षाओं का डर ।

परीक्षाएँ जीवन का हिस्सा,
मत बनाओ भय का किस्सा,
तुम्हारी मेहनत का ये शीशा,
दिखाती है तुम्हें सही दिशा ।

नहीं कदम उठाना नुकसानदेह,
जहाँ हो कोई भी प्रश्न या संदेह,
गुरुजनों से पूछो तुम निडर स्नेह,
तुम आनंद से भरपूर नि:संदेह ।

ईमानदारी से करो तुम पढाई,
अध्ययन में हो रूचि गहराई,
नित्य मेहनत ने तकदीर बनाई,
शिक्षा ने ही किस्मत चमकाई ।

त्याग दो परीक्षाओं का डर,
मत दो तन–मन को ये ज़हर,
भय को मत दो हवा भीतर,
तुम पर करता सब निर्भर ।

कल आज का प्यार

– श्री. संजय जैन 'बीना', मुंबई, महाराष्ट्र

सुकून मिले किसी को ।
किसी के प्यार से तो ।
प्यार आप जरूर कीजिये ।
दिलकी गहराइयों को दिलसे ।
कम से कम महसूस कीजिये ।।

है मोहब्बत कमवक्त ऐसी चीज़ जो ।
कोशिश करने के बाद भी नहीं होती ।
पर किसी से अगर नज़रें मिल जाये ।
तो फिर मोहब्बत शुरू होने लगती ।।

दिलका चैन और रातों की नींद ।
इसमें फिर पूरी लगने जो लगती ।
पर प्यार की बातें पूरी नहीं होती ।
सच में क्या मोहब्बत ऐसी होती ।।

आज का अंदाज बहुत अलग है ।
जिसमें जिस्म की भूख ज्यादा है ।
और प्यार मोहब्बत दिल से कम है ।
बस देखा देखी में बहुत ज्यादा है ।
और दिलों में प्यार कम रहता है ।।

विधाता छंद

नारायण वंदन

– श्री. संजय शर्मा, आगरा, उ.प्र.

कभी भूले हुए से भी,
हृदय हरि नाम आता है ।

जिन्हें प्रभु नाम नारायण,
सदा गुणगान भाता है ।।

नहीं माया सताती है,
सदा दुख दूर जाता है ।

प्रभाती में जपे हरि जो,
सदा बैकुंठ पाता है ।।

पाठकों के पत्र ...

आपकी प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रिका में स्थान पाना निश्चित रूप से ही मेरे लिए बहुत ही सुखद हर्षानुभूति है । बहुत-बहुत हृदय तल से आभार एवं अभिनंदन आदरणीय संपादक जी एवं समस्त संपादन समूह ।

– श्री. विजय कनौजिया, जनपद, उ.प्र.

नवांकुर

प्यार

– प्रजित. जे. संतोष,
सी.ऐ.टी. कॉलेज, कोवै, तमिलनाडु

एक पेड की ऊँचाई पर
एक छोटी चिडिया ने घोंसला बनाया
छोटे छोटे अंडे देकर उसे सजाया
निकलने लगे बच्चे चहचहाते हुए ।

माँ हर रोज बाहर जाती कुछ लाती
बच्चों का पेट भराकर उनमें जान भरती
बच्चे भी अपनी माँ के बल से बल पाते
उडने लायक हो गये माँ के साथ ।

एक रात आँधी आयी अपना घोर रूप ले
घोंसला वह बहते पानी में गिर गया
एक-एक करके बच्चों को बचाकर
माँ अपनी जान कुरबान कर दी थककर ।

अब बच्चे उड रहे हैं आसमान तक
अपनी उस माँ को ढूँढते हुए रोज
माँ की उस ममता को फिर से पाने
अपने जीवन को फिर से महकाने ।

ईमानदारी

– शंकर वेंकटेश्वरन,
श्री कृष्णा आर्ट्स एंड साइंस कॉलेज़, कोवै, तमिलनाडु

एक राजा था, उसे दस में एक को अपने राज्य की सेनापति चुना जाएगा । इसलिए राजा ने उन सब को कुछ बीज देकर बोला, सब इसे अपने घर ले चलो और 6 महीने बाद इसे एक लंबे पौधे बनाकर वापस ले आना । 6 महीने बाद 10 लोग राजा के पास वापस आये । उन में नौ लोग वह बीज को अच्छे से बढ़ाकर आये । उनमें सिर्फ एक आदमी ने वह बीजों को ऐसे ही वापस ले आया था । जब राजा ने उस आदमी से पूछा कि क्यों तूने इन बीजों से कुछ नहीं कर पाया, आदमी ने उत्तर दिया कि मैं भी हर दिन इन बीजों को पानी डालता हूँ और इसको पौधे बना के लिए बहुत कोशिश किया, लेकिन बीजों से कुछ नहीं हो रहा है । यह सुनकर राजा उसे गले लगाकर बोले कि, और तुम हो । इस राज्य की सेनापति और उनकी सारी अधिकार सिर्फ तुझे मिलना चाहिए । राजा ने सबको समझाया कि वह इन 10 लोग को उबले हुए बीजों को दिया, जो कभी नहीं बढ़ेगा । बाकी उन नौ लोग ने दूसरे बीजों खरीद कर बढ़ाया था । लेकिन वह एक आदमी ने हर चीज़ को बहुत ईमानदारी से किया था । ईमानदारी और सच्चाई उतनी ही ज़रूरी हैं जितनी किसी देश पर राज करने की काबिलियत ।

– श्रीमती. अलमेलु कृष्णन, चेन्नै, तमिलनाडु

पठितम्, अभिरुचितम्, अनूदितम्

ईश्वरः प्रेमति केवलं भक्तस्य अनुरागपूर्णं, निष्कपटं भक्तिम्

कुम्भाभिषेकात् पूर्वरात्रौ तञ्जावूरस्य महत्तमं मन्दिरं (राजराजेश्वरम् इति विख्यातं बृहदीश्वरमन्दिरम्) निर्माणसमाप्तिं गतम्, कुंभाभिषेक दिवसश्च निश्चितः अभवत् । राजराजचोळः महाराजः यथापेक्षितं मन्दिरं सम्पूर्णं दृष्ट्वा सन्तोषेण शान्तेन चेतसा सुखेन निद्रां गतवान् । तस्य स्वप्ने भगवान् परमशिवः प्रादुर्भूतवान् । स राज्ञः पुरस्तात् साक्षात् अवस्थितवान् । सः ''हे राजन् ! हे राजन् !'' इति राजानम् आह्वयत् ।

राजराजचोळः आनन्देन परिपूर्णः सन् परमेश्वरं प्रति अवदत् – ''हे देव ! हे प्रभो ! मम भाग्यं किं वक्तव्यं... यत् भवान् मह्यं दर्शनं दत्तवान्, तदेव मम महत् पुण्यफलं... ।'' इति सः भूयःहर्षेण पप्रच्छ ''भवते मया निर्मितं मन्दिरं कथं दृश्यते ?... अस्मिन् नगरे सर्वे जनाः विस्मयेन पश्यन्तु इति महत्तमं मन्दिरं निर्मितवान् अस्मि । तस्य नाम 'तञ्जावूर-महाक्षेत्रम्' इति स्थापयिष्यामि... भवतः आनन्दः एव खलु ?'' इति ।

भगवान् सस्मितं वदन्-

''हूम्... अत्यन्तं आनन्दिताः स्मः... एकस्याः वृद्धायाः पादच्छायायां अधः वयं परमसुखिताः स्मः...'' इत्युक्त्वा तत्रैव अन्तर्हितः अभवत् । ततः राजराजचोळस्य स्वप्नं विमुक्तं जातम् । प्रबुद्धः सन् राजराजचोळः प्रातःकाले राजसभायां सर्वेभ्यः स्वप्नवृत्तान्तं कथयामास, तस्य स्वप्नस्य व्याख्यानं अर्थं च मन्त्रिभ्यः राजपुरोहितेभ्यश्च पप्रच्छ ।

कोऽपि उत्तरं न जानाति स्म ।

ततः सः राजा राजराजेश्वरं महान् तञ्जावूरे निर्मितं बृहदीश्वरं मन्दिरं प्रति गतवान् । मन्दिरस्य शिल्पिने दृष्टस्य स्वप्नस्य व्याख्यां पप्रच्छ । शिल्पकारः संकोचम् अकरोत्, ''महोदय, गतमासत्रयं यावत्, एका दरिद्रा वृद्धा प्रतिदिनं मध्याह्नसमये अत्र आगच्छति... दारिद्र्यम् अस्ति चेदपि सा मन्यते यत् सा अस्य मन्दिरस्य कृते किमपि कर्तव्यम् । अतः सा धनार्थं विक्रीयमाणस्य सर्पिषस्य अर्धं भागं अस्माकं कार्यकर्तणां पानार्थं निःशुल्कं ददाति... वयं तस्याः धनं ददामः अपि सा न स्वीकरोति ।

'केवलं एषया वृद्धया मन्दिराय कृतं सेवनम्' इति वदति, धनं न गृह्णाति ।

एवं स्थिते, गतसप्ताहे एकस्मिन् दिवसे, यदा वयं मन्दिरस्य सर्वाणि शिल्पकार्याणि समाप्तवन्तः आस्म, तदा केवलं गर्भगृहस्योपरि स्थितं शिलाखण्डं (कूटशिलां) संयोजयितुं न शक्नुमः । वयं बहु प्रयत्नं कृत्वा तस्य मापं गृहीत्वा अनेकशः परीक्षितवन्तः, किन्तु एकदा शिलं अतिशयेन महत् भवति, अन्यदा तु अल्पं भवति । न कदापि सम्यक् आकारं मिलति स्म ।

तस्मात् अस्माकं सर्वेषां मनसि महान् विषादः जातः, यत् मन्दिरं पूर्णं न भवति इति ।

मन्दिरनिर्माणकार्यं अपूर्णं भविष्यति इति वयं चिन्तिताः आसम् । तदा तत्र आगता सा तक्र विक्रयिणी वृद्धा ''किं यूयं चिन्ताकुलाः स्थिताः ? किं कारणं विषादस्य ?'' इत्यपृच्छत् ।

वयं च शिलाखण्डस्य समस्या उक्तवन्तः । ततः सा ''मम गृहद्वारे महान् शिलाखण्डः अस्ति, । तं वासद्वारं इव स्थापितवान् अस्मि । यदि इच्छसि तर्हि तं गृहीत्वा प्रयुज्यताम्'' इत्यवदत् । ततः विश्वासं विना अपि वयं तस्याः वृद्धायाः उक्तं महाशिलाखण्डं गृहीत्वा आनीय, गर्भगृहस्य उपरि यथाविधि स्थापयितुं प्रयतितवन्तः ।

किन्तु आश्चर्यं ! तत् प्रस्तरं गर्भगृहस्य छादस्य कृते पूर्णतया सम्यक् युक्त्या संयुज्यते स्म – न अतिमहान्, न अल्पः, न किञ्चित् दोषः । तदेव भगवान् अस्मभ्यं संकेतं दत्तवान् अस्ति इत्यहं मन्ये, हे राजन्'' इत्युक्त्वान् शिल्पकारः ।

एताच्छ्रुत्वा ''यावत् धनं व्ययं कृत्वा अपि मन्दिरं निर्मितं भवति, तथापि ईश्वरः प्रेमति केवलं एकस्य दरिद्रस्य जनस्य अनुरागपूर्णं, निष्कपटं भक्तिं एव'' इति राजा अवगच्छत्...

ततः राजा राजराजचोळः नेत्रयोः अश्रूणि संनादति सन् – ''यद्यपि अहं महता धनेन व्ययं कृत्वा आरवारेण मन्दिरं निर्मापितवान् अस्मि, तथापि सा वृद्धा शान्त्या दरिद्रतायां स्थित्वा अपि स्वीयं विक्रेयं तक्रं मन्दिरकार्यकर्तणां तृष्णाशान्तये अर्पितवती । एतदेतदेव परमं सेवनम् !'' इत्युवाच ।

राजा पुनः स्वामन्त्रिणं आहूय उवाच – ''हे अमात्य ! कुम्भाभिषेकस्य शुभदिने तां वृद्धां राजगृहं आनयतु । अहं तस्याः कृते श्वेतच्छत्रं वहिष्यामि, तयैव कुम्भाभिषेकं कारयितुं सर्वं व्यवस्थां कुरु । एतत् मन्दिरं तया स्त्रिया निर्मितम्... न तु मया...। ईश्वरः अस्य साक्षी अस्ति ।''

தமிழமுது – நெல் பயிர் விளை

– எம். ஸ்ரீதர்,
நிறுவனர் : சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தான், சேலம், தமிழ்நாடு

ஆதிமனிதன் கிடைத்ததை உண்டு விலங்குகளை வேட்டையாடி நமது பசியை போக்கி கொண்டான். அனுபவமும் அறிவும் வளர வளர விளைநிலங்களை உருவாக்கியவர் அவற்றில் விதைகளை நட்டு பயிர்களை பெருக்கினான். பயிர்கள் வளர வளர பசிப்பிணி நீங்கியது. தானும் தமது குடும்பமும் உண்பதோடு பசியோடு வருபவர்களின் பசியை விரட்ட உணவளித்து தானம் என்னும் நன்னெறியை தமது நெறியாக்கி வாழ்ந்தவர்கள் தான் போற்றுதலுக்குரிய நம்முடைய மூதாதையர்கள்.

பொன்னோ, பொருளோ, நிலமோ என்ன கொடுத்தாலும் போதும் என்கின்ற மனது ஒரு சிலருக்கு மட்டுமே தோன்றும். ஊருக்கே உணவளித்தாலும் வயிறு நிறைந்தால் மனதும் நிறைந்து போதும் என்ற சொல் அனைவராலும் சொல்லப்படும். உணவால் மனிதனை திருப்திப்படுத்துவது எளிதான காரியம் ஆகும். அதே நேரத்தில் பசித்து வாடி நிற்கும் எந்த உயிருக்கும் உணவளிப்பது என்பது மிக மிக போற்றுதலுக்குறிய ஒரு காரியமாகும்.

இன்றைய காலகட்டத்தில் என்னென்னவோ பொருட்கள் சந்தைக்கு வந்த பின்பும் சோறு என்பது தென் மாநில மக்களின் பிரதான உணவாக இன்றும் இருக்கிறது. அரிசியில் செய்த தின்பண்டங்கள் இன்றும் எண்ணற்ற மக்களால் விரும்பப்படுகிறது.

நெல் பயிரானது மனிதருக்கு அரிசியாய் வந்து சோறு போடுகிறது. கால்நடைகளோடு பறவை இனங்களும் நெல் பயிரால் வயிறு நிறைகிறது. எனவே தான் நமது ஒளவை பாட்டி **நெல் பயிர் விளை** என்று கூறுகிறார்.

தொடரும்...

அருள் உலா
திருமுறைத் திருத்தல யாத்திரை
திருப்பாம்புரம்

- கயிலைத்திருவடி 'யுவதூத்'
Dr. **என். சந்திரசேகர்,** M.A., B.Ed., Ph.D., சேலம், தமிழ்நாடு

''மாலினுக்கு அன்று சக்கரம் ஈந்து
மலரவற்கு ஒருமுகம் ஒழித்து
ஆலின்கீழ் அறமோர் நால்வருக்கு அருளி
அனலது வாடும் எம்மடிகள்
காலனைக் காய்ந்து தம்கழல் அடியால்
காமனைப் பொடிபட நோக்கிப்
பாலனுக் கருங்கள் செய்தஎம் மடிகள்
பாம்புர நன்னக ராரே''

- ஸ்ரீ ஞானசம்பந்தப் அருளிய முதலாம் திருமுறைப் பாடல்

சேஷபுரி, உரககிரி என்றெல்லாம் அழைக்கப்படும் திருப்பாம்புரம் என்னும் தேவார பாடல் பெற்ற தலம் காவிரியாற்றின் தென்கரையில் அமைந்த 59-ஆவது திருத்தலம் ஆகும்.

அருள் வரலாறு :

ஒரு சமயம் திருக்கயிலாயத்தில் அருளாட்சிபுரியும் ஸ்ரீ சிவபெருமானை ஸ்ரீ விநாயகர் வணங்கி மகிழ்ந்தார். அதுசமயம் சிவபெருமான் கழுத்தில் இருந்த பாம்பு ஒன்று ஸ்ரீ விநாயகர், தம்மையே வணங்கியதாக எண்ணி கர்வம் மேலிடப் பேசியது.

இதனால் கோபம் கொண்ட ஈசன் பாம்பினங்கள் பலம் இழக்க சபித்தார்.

இதன் காரணமாகப் பூமியைத் தாங்கும் ஆயிரம் தலை கொண்ட ஆதிசேஷன் உள்ளிட்ட அனைத்து நாகங்களும் பலம் குன்றி சோர்வடைந்தன. அதுசமயம் ஆதிசேஷன் தலைமையில் எல்லா நாகங்களும் சென்று ஸ்ரீ சிவபெருமானிடம் சென்று மன்னிப்பும் சாப விமோசனமும் வேண்டின.

மனம் கனிந்த ஈசனும் பூவுலகில் திருப்பாம்புரம் சென்று மஹாசிவராத்திரியன்று தம்மை வழிபட சாபம் நீங்கும் என்றார்.

அவ்வாறே ஒரு மஹாசிவராத்திரியன்று ஆதிசேஷன் தலைமையில் நாகங்கள் அனைத்தும் முதல் காலத்தில் கும்பகோணம் நாகேஷ்வரரையும், இரண்டாம் காலத்தில் திருநாகேஷ்வரம் நாகேஷ்வரரையும், மூன்றாம் காலத்தில் திருப்பாம்புரம் பாம்புபுரஈசரையும், நான்காம் காலத்தில் நாகூர் நாகநாதரையும் வணங்கி சாபவிமோசனம் பெற்று இழந்த பலத்தை மீண்டும் பெற்றன என்பது தல வரலாறு.

பாம்புகள் வழிபட்ட காரணத்தால் இத்தலம் பாம்புபுரம் - பாம்புரம், உரகபுரி, சேஷபுரி என்றெல்லாம் அழைக்கப்படுகிறது.

சிறப்புக்கள் :

1. தல விநாயகர் ஸ்ரீ ராஜராஜ விநாயகர்.
2. இத்தலத்தில் உள்ள ஸ்ரீ சட்டநாதர், ஸ்ரீ மலையீசர் சந்நிதிகள் சிறப்பு வாய்ந்தவை ஆகும்.
3. இந்தத்தலம் காலசர்ப்பதோஷம், ராகு-கேது தோஷம் நீக்கும் பரிகாரத்தலமாகத் திகழ்கிறது.
4. திருமணத் தடைநீக்கம், பிள்ளைப் பேறு அருளுதல் என சிறந்த ப்ரார்த்தனைத் தலமாகவும் இத்தலம் விளங்குகிறது.
5. ஞாயிறு, செவ்வாய், வெள்ளி நாட்களில் இத்தலத்தில் மல்லிகை, தாழம்பு வாசனை வீசுவது அனுபவம். இந்தச் சமயங்களில் திருக்கோயிலில் எங்கோ பாம்பு உள்ளது என்கின்றனர்.
6. இத்தலத்தில் யாரையும் பாம்புகள் கடிப்பது இல்லை.
7. ஆதிசேஷன், சிற்றம்பல விநாயகர் அருளால் அமைத்த திருக்குளம் சிற்றம்பலக்குட்டை என்ற பெயரில் வடக்கு வீதியில் உள்ளது.
8. ராஜராஜ சோழன், ராஜேந்திர சோழன், சுந்தரபாண்டியன், சரபோஜி மன்னர் ஆகியோர் காலத்துக் கல்வெட்டுக்கள் இத்தலத்தில் உள்ளன.
9. கல்வெட்டுக்களில் இறைவன் பாம்புரம் உடையார் எனவும், இறைவி மாமலையாட்டி என்றும், விநாயகர்

ராஜராஜப் பிள்ளையார் என்றும் குறிக்கப்பட்டுள்ளனர்.

10. சரபோஜி மன்னனின் அதிகாரி ரகுகுண பண்டிதராயன் வசந்தமண்டபம் கட்டியுள்ளார்.
11. நாகராஜனுக்கு மூலவர் படிமம் மற்றும் உற்சவத் திருமேனி உள்ளன.
12. ராகு-கேது இருவரும் ஒரே சரீரமாக நெஞ்சில் சிவலிங்கம் வைத்து வழிபடுவது சிறப்பு.

ஸ்ரீ ஸ்வாமி - ஸ்ரீ அம்பாள் :

இறைவன்	:	ஸ்ரீ சேஷபுரீஷ்வரர் (எ) ஸ்ரீ பாம்புரநாதர்
இறைவி	:	ஸ்ரீ பிரமராம்பினை (எ) வண்டார் குழலி
தலமரம்	:	வன்னிமரம்
தீர்த்தம்	:	ஆதிசேஷ தீர்த்தம்
வழிபட்டு அருள் பெற்றோர்	:	பார்வதி, இந்திரன், சந்திரன், தக்ஷன், ஆதிசேஷன், அகஸ்தியர், கங்கை முதலானோர்

அருட்பதிகங்கள் :

ஸ்ரீ சம்பந்தர், ஸ்ரீ அப்பர், ஸ்ரீ சுந்தரர் ஆகியோர் இத்தலத்துப் பெருமையினைப் பாடல்களாகப் பாடி மகிழ்ந்துள்ளனர்.

தரிசன காலம் :

காலை 07.00 மணி - பகல் 12.30 மணி வரை
மாலை 04.00 மணி - இரவு 08.00 மணி வரை

தொடர்புத் தொலைபேசி எண் :

9626969616, 9443047302, 9443943665

தொடர்பு முகவரி :

ஸ்ரீ சேஷபுரீஷ்வரர் திருக்கோயில்,
திருப்பாம்புரம்-612203.
சுரைக்காயூர் அஞ்சல்,
குடவாசல் வட்டம்,
திருவாரூர் மாவட்டம்.

அமைவிடம் :

தேவார பாடல் பெற்ற தலமாகவும், பரிகாரத் தலமாகவும் எல்லோர் குறைபோக்கும் திருப்பாம்புரம் திவ்யத் தலமானது காரைக்கால்-கும்பகோணம் சாலையில் பேரளத்திற்கு அருகே

உள்ள கற்கத்தியில் இருந்து சுமார் 2 கி.மீ. தொலைவில் அமைந்துள்ளது.

மயிலாடுதுறை-திருவாரூர் மார்க்கத்திலும் பேரளம் வந்து அங்கிருந்து சுமார் 7 கி.மீ. கடந்து இத்தலம் வரலாம்.

ஸ்ரீ பிரமராம்பிகா ஸமேத

ஸ்ரீ சேஷபுரீஷ்வர பரப்ரஹ்மணே நம:

... அருள் உலா தொடர்கிறது.

Scan this QR code to follow
SHABARI BOOK SALES, SALEM
WHATSAPP CHANNEL

Scan this QR code to follow
SHABARI SIKSHA SANSTHAN, SALEM
WHATSAPP CHANNEL

இணைந்திடுங்கள்... இணைத்திடுங்கள் இதயங்களை...

அன்பார்ந்த வாசகர்களே,

உள்ளத்தையும் எண்ணத்தையும் உயர்த்தும் படைப்புகளுடன் ஹிந்தி, தமிழ், சமஸ்கிருதம் ஆகிய மும்மொழிகளில் வருகிறது சபரி சிக்ஷா சமாச்சார் பத்திரிக்கை. ஆண்டுச் சந்தா ₹100/- செலுத்தி இந்த இலக்கியப் பயணத்தில் நீங்களும் இணையலாம். நண்பர்களுக்கும், உறவினர்களுக்கும், மாணவர்களுக்கும் இந்த நல்ல பத்திரிக்கையை பரிசளியுங்கள்.

Send MONEY ORDER or DD to
SHABARI SIKSHA SANSTHAN,
194, 2nd Agraharam, SALEM-636001. TN
PHONE : 9842765414

SHABARI SIKSHA SAMACHAR, SALEM

Form IV (See Rule 8)

Statement about ownership and other particulars about Shabari Siksha Samachar (according to Form IV. Rule 8 circulated by the Registrar of Newspaper for India).

1.	Place of Publication	:	Salem - 636 001
2.	Periodicity of its Publication	:	Monthly
3.	Printer's Name	:	D. Sivakumar
	Nationality	:	Indian
	Address	:	Sivamurthy Press, 35, A.P. Koil Street, Salem - 636 001.
4.	Publisher's Name	:	M. Sridhar
	Nationality	:	Indian
	Address	:	37, First Agraharam, Salem - 636 001.
5.	Editor's Name	:	M. Venkateswaran
	Nationality	:	Indian
	Address	:	197, Second Agraharam, Salem - 636 001.
6.	Name & Address of the individuals who own the newspaper and partners or shareholders holding more than 1 % of the capital	:	M. Sridhar Owner & Publisher 37, First Agraharam, Salem - 636 001.

I, M. Sridhar, hereby declare the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd.

Date : 05.03.2026. **M. Sridhar**

Signature of the Publisher

JOIN Vani Vikas

Spoken Hindi Examination

Learn Spoken Hindi in Simplest Way

வாணி விகாஸ் தேர்வுகள்

வாய்மொழி தேர்வு

முயன்றால் முடியாதது எதுவுமில்லை
முடங்கிக் கிடந்தால் எது முடியும் ?
எழுந்து நடந்தால் இமயமும் படியும்
மொழியொன்று கற்றால் வழியொன்று
மொழிகள் பலகற்றால் பல வழியுண்டு
வாருங்கள் சபரியுடன் வழிகாட்டுகிறோம்
வருங்காலம் வளமாகிட வழிகாட்டுகிறோம்
வாருங்கள் வாணிவிகாஸில் சேருங்கள்
ஹிந்தியை இதயபூர்வமாய் பேசிட வாருங்கள்

- **Eight** Graded Levels
- No Previous Hindi Qualifications
- Certificate Issued For Each Level

SHABARI SIKSHA SANSTHAN,
Second Agraharam, Salem - 636 001.
Visit us at https://shabari.in/

Posted at Salem HPO 636 001. March-2026

Published on 5th March-2026

Posted on 6th & 7th of every month. R.N.I. No. : TNMUL/1999/00402
Postal Reg. No. : TN/WR/SLM(E)/121/2024-2026
Licenced to post without prepayment. TN/WR/SLM(E)/121/WPP/2024-2026

कृपया सभी पत्र व्यवहार में अपनी सदस्यता संख्या का अवश्य उल्लेख करें।
அனைத்து கடித போக்குவரத்துகளிலும் தங்களுடைய உறுப்பினர் எண்ணை தவறாமல் குறிப்பிடவும்.
Please quote your subscription number in all correspondences.

If undelivered please return to
Shabari Siksha Samachar,
A.O. 194, Second Agraharam, Salem - 636 001.

To

DON'T TEAR THE LABEL IF UNDELIVERED

Hindi Bala Bharathi

Syllabus, Key books, Blue Print, Model Question Papers

PDF Question Paper Available for Quarterly, Half Yearly & Annual Exams

Third Language Hindi Text Book

Learning becomes fun and friendly,
Simple and Sample learning series,
Easy exercises with english meanings,
Multi coloured and attractive,
Learning becomes easy and effective,
Perfect pictures, proper words,
Planned work for perfect learning,
Excellent exercises to improve the language skills.

A (For LKG) - ₹ 50.00
B (For UKG) - ₹ 60.00
1 (For Std. I) - ₹ 90.00
2 (For Std. II) - ₹ 90.00
3 (For Std. III) - ₹ 90.00
4 (For Std. IV) - ₹ 90.00
5 (For Std. V) - ₹ 90.00
6 (For Std. VI) - ₹ 100.00
7 (For Std. VII) - ₹ 100.00
8 (For Std. VIII) - ₹ 100.00
9 (For Std. IX) - ₹ 100.00

SHABARI BOOK HOUSE

"Shabari Palace", 194, Second Agraharam, Salem - 636 001.
Whatsapp : 94431-65414
Phone : 94433-65414, 98427-65414
Visit us at https://books.shabari.org/